ज्ञानामृत

जुलाई, 1985 वर्ष 21 ❋ अंक 1 मूल्य 1.50

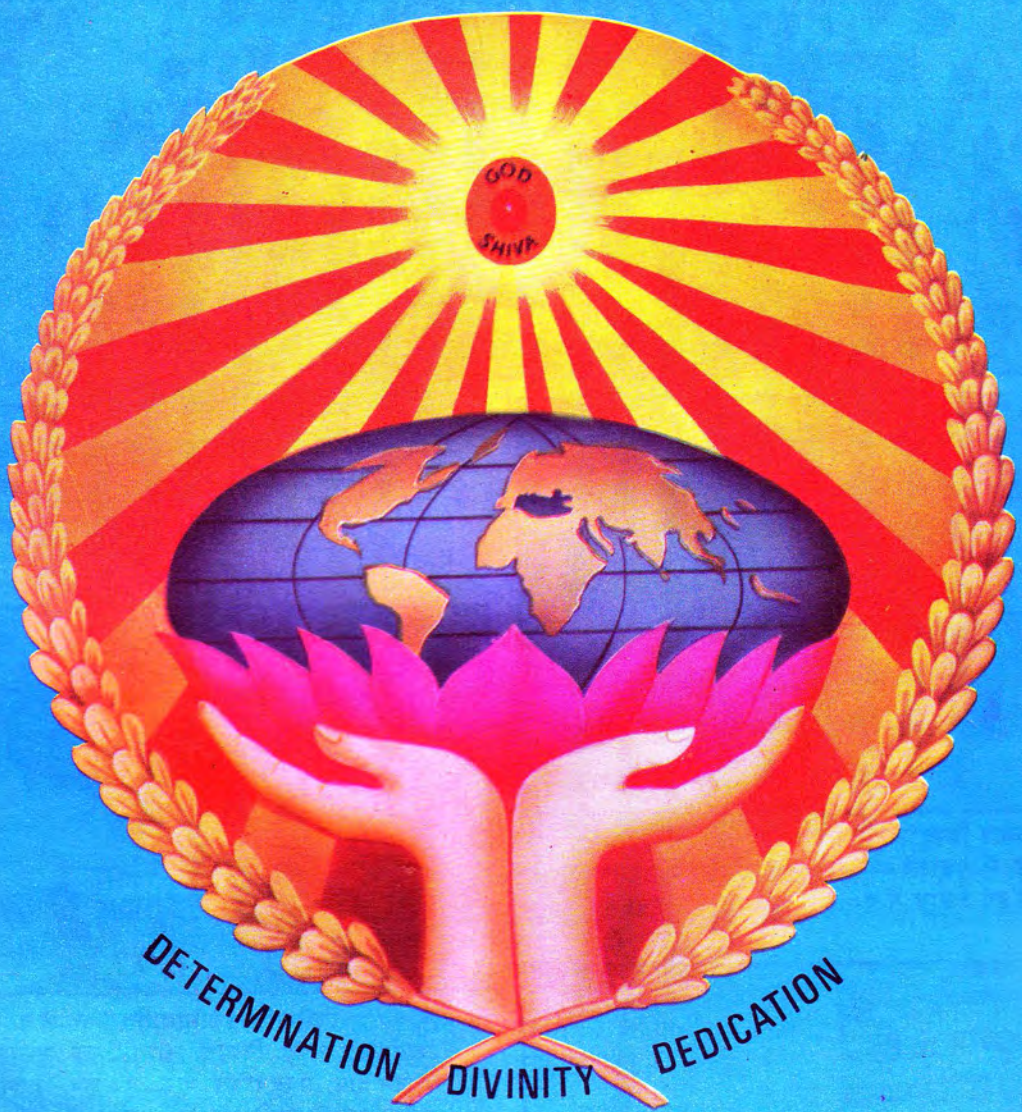

यदि युवा निश्चय-बुद्धि बन दिव्यता को धारण करे और विश्व सेवा में अपने को समर्पण करे तो आज का विश्व शीघ्र ही पवित्रता, सुख-शान्ति, समृद्धि सम्पन्न बन सकता है।

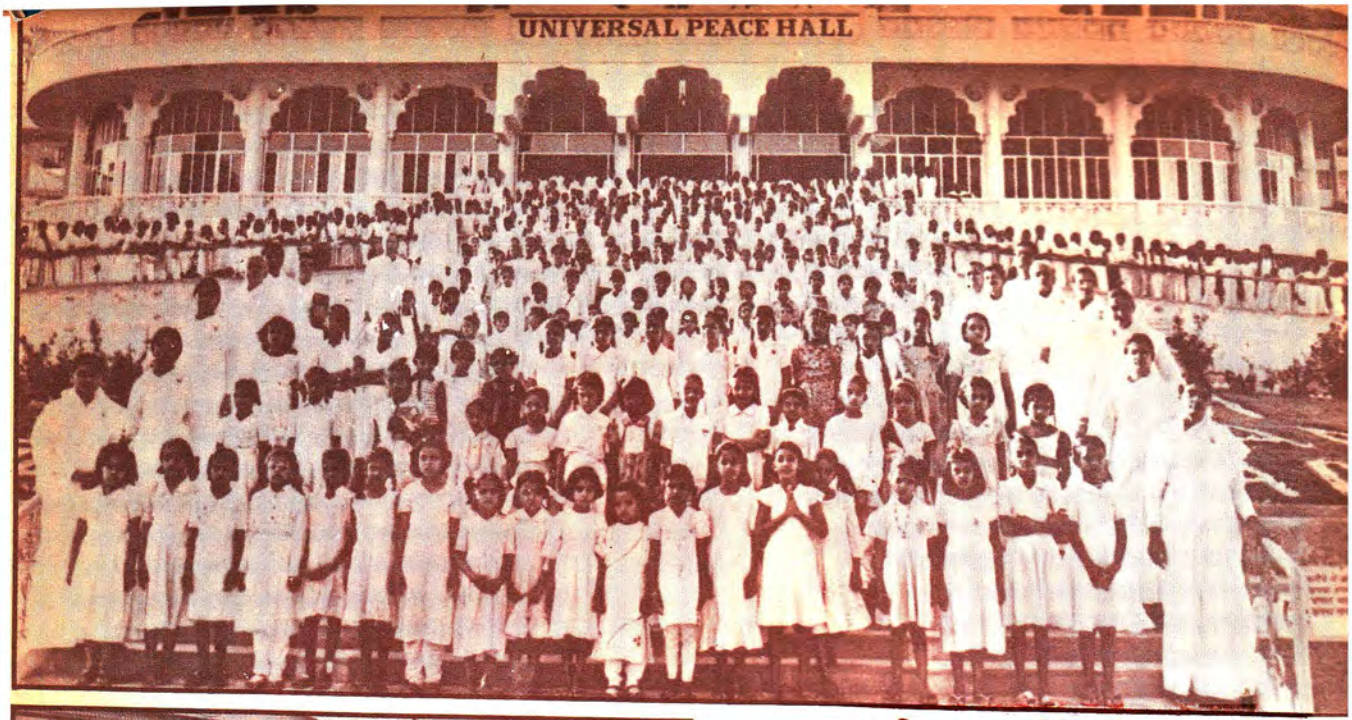

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ई० वि० विद्यालय द्वारा अपने मुख्यालय, माउंट आबू में आयोजित बालशिविर में भारत के भिन्न-२ नगरों से लगभग ५०० बच्चों ने भाग लिया। वे ओम शान्ति भवन के समक्ष शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

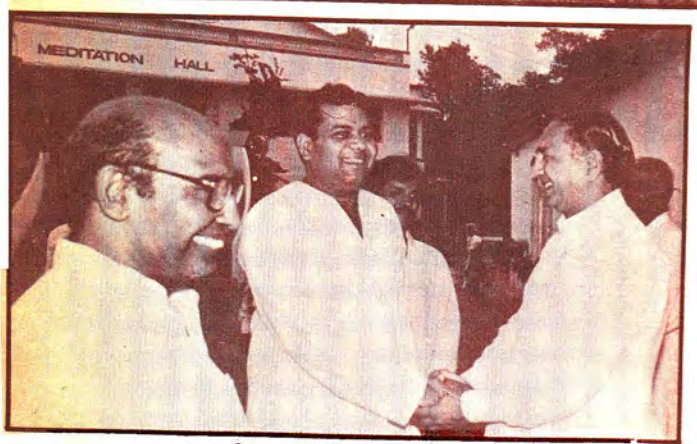

भ्राता विष्णु मोदी, संसद सदस्य के आबू स्थित पाण्डव भवन में पधारने पर ब्र० कु० निर्वैर जी उनका स्वागत करते हुए। साथ में ब्र० कु० बलदेव प्रसन्न मुद्रा में।

इन्दौर स्थित ओमशान्ति भवन के वार्षिकोत्सव पर आयोजित 'राष्ट्र विकास आध्यात्मिक सम्मेलन' का उद्-घाटन दीप प्रज्जवलित कर ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, बहिन गायत्री मोदी, न्यायमूर्ति आर० के० वर्मा, भ्राता व्ही के० पंडित तथा ब्र० कु० ओम प्रकाश जी कर रहे हैं।

दिल्ली-शक्ति नगर की ओर से माडल टाउन क्षेत्र में आयोजित मेले के समापन समारोह में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं—भ्राता स्टीव नारायण, ग्याना के उच्चायुक्त। मंच पर (बाएं से) श्रीमति चन्द्रशेखर, महिला एवं समाज कल्याण की मन्त्री, भ्राता कुलानन्द भारती, कार्यकारी पार्षद, भ्राता आर० एल० गुप्ता, डिस्ट्रिक्ट एवं सैशन जज तथा ब्र० कु० चक्रधारी।

बम्बई—गोरेगाँव सेवाकेन्द्र पर गुजरात के कथाकार भ्राता मुरारी बाबू के पधारने पर ब्र० कु० दिव्या उन्हें शिव बाबा का परिचय देते हुए ।

मुरादाबाद में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता दिनेश चन्द्र अग्रवाल (मुन्सिफ मजिस्ट्रेट) कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० गंगा, शीला तथा अन्य ।

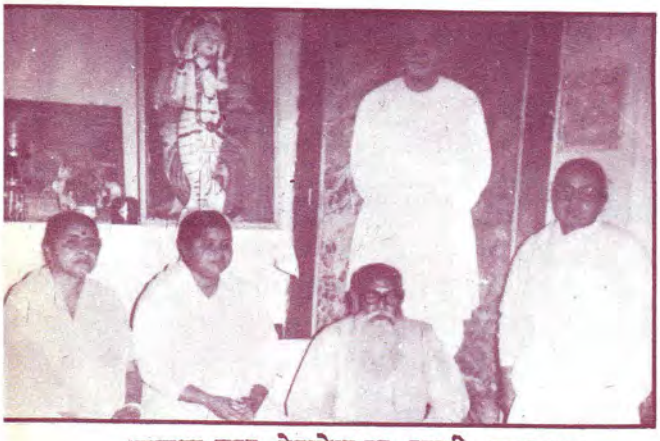

अम्बाला शहर सेवाकेन्द्र पर स्वामी तारकानन्द जी महाराज, अखण्ड आश्रम चित्रकूट, पधारे। वे राजयोग का अभ्यास करते हुए। ब्र० कु० सरोज, कृष्णा साथ में हैं।

फ़िरोज़पुर शहर में ब्र० कु० त्रिपता पदर्शनी समझाने के पश्चात् स्कयोरिटी आफ़ीसर को साहित्य भेंट करते हुए।

सिद्धपुर सेवाकेन्द्र द्वारा ब्राह्मण वाड़ा में युवा प्रदर्शनी का उद्घाटन जैन मुनि भानु विजय जी कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० विजय, दक्षा, मनोज तथा अन्य खड़े हैं ।

उस्मानाबाद (सोलापुर) में आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपने विचार सुनाते हुए सिविल सर्जन भ्राता गायकवाड़ जी।

अम्बाला छावनी में ब्रिगेडियर हरमंदर सिंह जी, बहिनों के प्रवचन के बाद अपने विचार रखते हुए ।

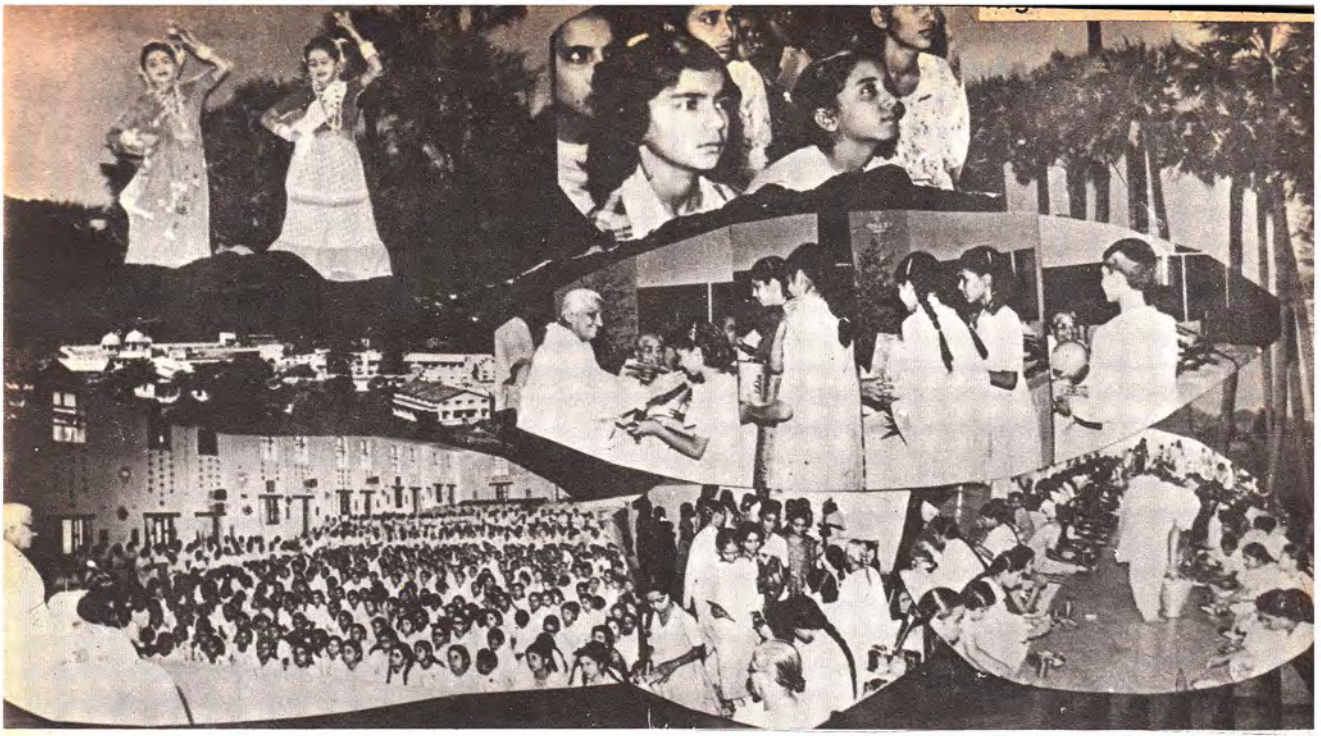

आबू पर्वत पर हुए बालशिवर में बच्चों के भिन्न-२ कार्यक्रम हुए (बायें से) ऊपर साँस्कृतिक कार्यक्रम का एक दृश्य, परमात्मा की याद में लवलीन बच्चे, (बीच में) ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी बच्चों को पुरस्कार बाँटते हुए। नीचे बाँए से बच्चे ज्ञान की कलास में ध्यानपूर्वक ज्ञान श्रवण करते हुए, ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी बच्चों को ईश्वरीय सौगात देते हुए, बच्चे ब्रह्मा भोजन करते हुए।

भुवनेश्वर में भारत एकता युवा पदयात्रा के नेहरु पार्क में पहुँचने पर ब्र० कु० संदेशी पदयात्रियों को तिलक दे रही हैं।

जयपुर राजापार्क सेवा केन्द्र—आमेर जेसीज़ क्लब में 'युवा चेतना एवं विश्व उत्थान' विषय पर ब्र० कु० पूनम प्रवचन करते हुए।

भ्राता रामजी लाल, सदस्य नगर निगम, खानपुर, दक्षिण दिल्ली में शिव शक्ति ज्ञान मन्दिर में प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् ब्र० कु० आशा से श्रीकृष्ण का चित्र ईश्वरीय सौगात लेते हुए।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	सर्व दुःखों व तनावों का कारण—चरित्र-हीनता	१
२.	सम्पूर्ण योग (सम्पादकीय)	२
३.	गीत	४
४.	युवा वर्ष में युवा प्रधानमंत्री का चिन्तन···	५
५.	युवा वर्ष पर युवावर्ग को आह्वान	७
६.	नर्क और स्वर्ग को जोड़ने वाला पुल	८
७.	सहनशीलता	९
८.	शरीर और आत्मा	११
९.	सेवा ही सर्वोत्तम	१३
१०.	चिन्ता तेरी तभी मिटेगी जब चिन्तन में ले लो राम	१५
११.	अनोखा शिव बाबा और उसकी अनोखी महिमा	१६
१२.	सचित्र सेवा समाचार	१७
१३.	अब हमें क्या करना है ?	१८
१४.	क्या पति को परमेश्वर कहा जा सकता है ?	१९
१५.	आओ खेल खेलें	२०
१६.	सहनशक्ति—सर्व विघ्नों से बचने का कवच	२१
१७.	आध्यात्मिक ज्ञान—युवा की शान	२५
१८.	अब युग बदलेगा	२६
१९.	दहेज-प्रथा	२८
२०.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९

सर्व दुःखों व तनावों का कारण—चरित्रहीनता

भोपाल—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की देहली क्षेत्र की अध्यक्षा ब्र०कु० हृदय मोहिनीजी ने स्थानीय राजयोग भवन में आयोजित जन-सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि—"यही भारत पूर्व में सुख शान्ति सम्पन्न स्वर्ग था परन्तु आज इसकी दशा क्या हो गयी है। चारों ओर तनाव व समस्याओं का घेरा है। सब चाहते हैं शान्ति हो जाये, परन्तु वे अशान्ति के मूल कारण से अनभिज्ञ हैं। वास्तव में जैसे सुख शान्ति की जननी पवित्रता है उसी प्रकार दुःख अशान्ति की जननी अपवित्रता (अशुद्ध विचार) अर्थात चरित्र-हीनता है। सतयुग में देवताएं निर्विकारी होने के कारण ही मर्यादा पुरुषोत्तम सुखी व सम्पन्न थे। पवित्रता से ही वहां सन्तुष्टता थी, भौतिक आकर्षण व इच्छाएं न थीं। परन्तु आज भौतिकवाद ने रावण की भांति प्रकृति के तत्वों पर तो विजय प्राप्त कर ली है परन्तु स्वयं के मन की इच्छाओं पर उसका नियन्त्रण नहीं है, क्योंकि वह एक छोटी सी भूल कर रहा है, 'मैं कौन हूं' इस पहेली को वह नहीं जानता। स्वयं को देह मानने के कारण ही काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, अहंकार, घृणा आदि अपवित्रता का शिकार है जो उसके मानसिक तनाव तथा दुःखों का एक मात्र कारण है।

अतः "टेन्शन" (तनाव) को दूर करने का आधार सिर्फ एक "अटेन्शन" (सावधानी) है कि मैं शान्त, पवित्र व शक्ति स्वरूप आत्मा हूं। राज-योग हमें स्वयं तथा परमात्म-शक्ति के प्रति अटेन्शन दिलाता है तथा मन को एकाग्र करता है जिससे आत्मा में दृढ़ता की शक्ति आती है। "दृढ़ता ही हमारी सफलता की चाबी है" जिसके द्वारा हमें तनावों से मुक्ति मिल सकती है।"

उपरोक्त प्रवचन से म० प्र० के मंत्रीगण, उच्च प्रशासनिक अधिकारियों तथा अन्य जनसमूह ने लाभ लिया। मंत्रीगण ने दादी जी के सम्मान में माल्यार्पण भी किया।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

सम्पूर्ण योग

परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से हमें जो सहज योग सिखाया है, उसे हम प्रायः 'राजयोग' कहा करते हैं। उस योग को यह नाम देने के हम कई कारण बताया करते हैं जिनमें से तीन कारण मुख्य हैं। प्रथम यह कि यह योग शारीरिक क्रियाओं पर अवलम्बित न होकर मन का ही योग है और इस योग का उद्देश्य मन का इन्द्रियों पर पुनः राज्य स्थापन करना है। दूसरे यह कि यह योग अन्य सभी प्रकार के योगों में श्रेष्ठ है और जैसे किसी देश का शासक वहाँ के नागरिकों में सर्वोपरि होने के कारण 'राजा' कहलाता है, वैसे ही संसार में प्रचलित सभी योगों या तथा-कथित योगों में सर्वोपरि होने से 'राज-योग' है। तीसरे, चूँकि इस योगाभ्यास द्वारा मनुष्य को भविष्य में दैवी राज्य घराने में अथवा देवताओं के राज्य में प्रकृति पर शासक होने का अधिकार मिलता है, इस-लिए भी यह 'राजयोग' है।

इस नाम से गलतफ़हमी की गुंजायश

राजयोग नाम भी है तो अच्छा परन्तु इस योग को 'राजयोग' की संज्ञा देने से ग़लतफ़हमी होती है और ग़लतफ़हमी होने की गुंजाइश बनी ही रहती है क्योंकि पतंजलि द्वारा बताये गये योग को भी 'राजयोग' ही कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त, हमारे इस योग को 'राज-योग' की संज्ञा दिये जाने के परिणामस्वरूप लोग ऐसा भी समझने लगते हैं कि हमारे इस योग में भी प्राणायाम और आसनों को कुछ स्थान प्राप्त है यद्यपि वह स्थान हठयोग में दिये गये महत्व से गौण है, क्योंकि पतंजलि के राजयोग, जिसे 'अष्टांग योग' भी कहा जाता है, में इनको भी योग के अंग तो माना ही गया है, यद्यपि उन पर अधिक बल नहीं दिया गया।

एक विशेष बात यह भी है कि आज संसार में, विशेषकर भारत में, जो 'ज्ञान योग', 'भक्ति योग', 'कर्म योग', 'संन्यास योग', 'बुद्धि योग' आदि नामों से विविध साधनाएँ प्रसिद्ध अथवा प्रचलित हैं, उनको ध्यान में रखते हुए भी कुछ लोग यह सोचने लगते हैं कि हमारा यह योग इन सभी से भी भिन्न है और कि यदि हमारा योग पतंजलि के राजयोग से अभिन्न न भी हो तो भी उसके निकटतम अथवा उसका ही कोई रूपान्तर तो है ही। इस प्रकार उन्हें यह भी भ्रान्ति होने की संभावना होती है कि हमारे इस योग में एकाग्रता (Concentration) पर तो विशेष महत्त्व है परन्तु शायद इसमें परमात्मा के साथ अनन्य प्रेम का सम्बन्ध जोड़ने पर विशेष बल नहीं है।

अतः हमारे इस योग को 'राजयोग' कहने से लोगों पर जो तत्क्षण प्रभाव पड़ता है, वह यह तो होता है कि यह एक उच्च प्रकार का, विधिवत और (शायद) शास्त्र सम्मत योग है। परन्तु जब आगे-आगे वे हमसे हमारे योग की चर्चा सुनते हैं तो उन्हें थोड़ा आश्चर्य भी होता है, थोड़ा खेद भी, थोड़ी मायूसी भी और थोड़ी खुशी भी। जब वे हमारी चर्चा के दौरान यह देखते हैं कि न तो हम कहीं पतंजलि का नाम लेते हैं, न उसके सूत्र का कहीं उच्चारण करते हैं और न हममें से अधिक लोग संस्कृत ही जानते हैं तो कुछेक लोगों को आश्चर्य भी होता है, खेद भी और मायूसी भी। परन्तु उन्हें खुशी इस बात की होती है कि हमारा यह योग सहज योग है और इसमें परमात्मा के प्रति अनन्य प्रेम, उसमें अटूट श्रद्धा और जीवन को सात्विक प्रवृत्ति में ढालने की विधि और आजकल के समय, परिस्थितियों आदि को सामने रखते हुए मनुष्य की समस्याओं का हल भी है, तब उन्हें बेहद खुशी भी होती है। विशेषकर जब वे यह देखते हैं कि इस योग को छोटी-छोटी कन्याएँ और बहनें सिखा रही हैं तब भी उन्हें आश्चर्य व खुशी दोनों का

अनुभव होता है। पहले तो वे यह सोचते हैं कि ये छोटी-छोटी कन्याएँ भला योग कैसे सिखा सकेंगी ? योग सिखाने वाला व्यक्ति तो कोई वयोवृद्ध, जटा-जूटीधारी व्यक्ति होना चाहिए परन्तु जैसे-जैसे वे हमारी बातें सुनते हैं, वैसे-वैसे उन्हें लगता है कि ये भी इस विषय की अनुभाविनी हैं और ये सरलतापूर्वक अपने अभ्यास व अनुभव की ही बात सहज रूप से ऐसे ही बता रही हैं जैसे कि कोई आँखों-देखा हाल सुनाता है या जिस रास्ते से किसी ने यात्रा की हो, उस रास्ते का अपना निजी अनुभव सुनाता है।

यदि इस योग को 'सम्पूर्ण योग' कहा जाय तो कैसा रहेगा ?

इन सब बातों को देखकर हम यह समझते हैं कि राजयोग नाम सुनकर पहले-पहले तो लोगों को कुछ ग़लतफ़हमी होती है। अतः यह विषय विचारणीय है कि यदि हम इसे 'सम्पूर्ण योग' कहें तो कैसा रहेगा ? यह बात ठीक है कि यह नाम सुनते ही लोग तुरन्त यह तो नहीं समझ जायेंगे कि हम किस प्रकार के योग का अभ्यास करते और कराते हैं परन्तु इस नाम के कुछ अपने लाभ हैं जिनसे मनुष्य के मन में कुछ अच्छी भावनाएँ जागृत हो सकती हैं। इस नाम से श्रोता के मन में सवप्रथम तो यह भाव पैदा होता है कि इस योग में शायद सभी प्रकार के योगों की अच्छी बातें अथवा उनके गुण शामिल होंगे, तभी तो इसका नाम सम्पूर्ण योग है। अतः उन्हें जानने की उत्सुकता होगी कि सुनें तो सही कि यह सम्पूर्ण योग कैसे है ? हो सकता है कि उन्हें यह नाम सुनते ही ऐसा भी आभास हो कि ये अपने योग के बारे में अतिशयोक्ति कर रहे हैं, परन्तु ऐसा होने पर भी उन्हें 'सम्पूर्णता' शब्द की व्याख्या सुनने की चेष्टा तो होगी ही। इस प्रकार यह शब्द प्रेरक (Motivative) होगा, रुचि उत्पादन करने वाला सिद्ध होगा; और शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रेरणा (Motivation), उद्दीपन (Stimulus) या रुचि (interest) का होना प्रथम आवश्यकता है और ब्रह्मा बाबा सदा कहते कि ज्ञान सुनाने से पहले श्रोता के मन में उत्कट रुचि पैदा करो।

दूसरी बात यह है कि इस नाम को लेकर हमें यह सुनाने का स्वाभाविक अवसर मिल जाएगा कि इसमें अन्य सभी योग कैसे समाए हुए हैं क्योंकि 'सम्पूर्ण' शब्द के उच्चारण करते ही यह स्थिति तो पैदा हो ही जाती है कि जल्दी या थोड़ी देर में श्रोता को संक्षेप या विस्तार में यह बता ही दिया जाएगा या कम-से-कम संकेत ही दे दिया जाएगा कि इसमें अमुक-अमुक सभी योग समाए हुए हैं।

इस नाम से एक लाभ यह भी होगा कि यह नाम लोग प्रथम बार सुन रहे होंगे। अन्य नाम 'भक्ति योग', कर्म योग इत्यादि तो लोगों ने पहले सुन रखे हैं और उन नामों को सुनते ही उनके विषय में पुरानी सुनी और पढ़ी हुई बातें तुरन्त उनके मन में उभर आती हैं जबकि इस नाम को सुनते ही उनमें यह भाव उत्पन्न होगा कि यह नाम तो हम प्रथम बार सुन रहे हैं, और कि यह कुछ नई बात मालूम होती है, इसलिए देखें ये बहनें क्या कहती हैं। गोया पुरानी सुनी हुई अथवा शास्त्रों में पढ़ी हुई बातें, जो कई बार नई बात समझने के रास्ते में रुकावट बन जाती हैं, वे कुछ समय तो उत्सुकता के पर्दे के पीछे हटकर रहेंगी।

'सम्पूर्ण' विशेषण की यह भी एक सार्थकता है कि हम इसे लेकर लोगों को यह भी बता सकेंगे कि इससे मनुष्यात्मा अपनी सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है और जो सदा सम्पूर्ण परमात्मा है, उन्होंने ही इस योग की शिक्षा दी है। दूसरे योग एकांगी हैं और यह सर्वांगीण है। यह मनुष्य के सर्व गुणों का, उसके कुल व्यक्तित्व (Total personality) का, आत्मा की अन्तर्निहित (hidden) सभी योग्यताओं (potentialities) का सर्वमुखी (Multi-faceted) और वह भी सम्पूर्ण पराकाष्ठा में (full degrees) विकास करता है। इस व्याख्या से यह लाभ होगा कि जो लोग शुरू-शुरू में राजपद (Sovereignty) या स्वर्ग के राज्य को महत्त्वपूर्ण नहीं मानते वे भी सम्पूर्णता की बात

को तो अच्छा मानेंगे ही और इसमें हमारा भी अभिप्राय सिद्ध हो जाएगा क्योंकि परोक्ष रूप से (indirectly) उनकी यह स्वीकृति मिल जाएगी कि आत्मा अभी सम्पूर्ण नहीं है बल्कि कलाएँ गँवा चुकी है और, दूसरे, कि आत्मा पावन से पतित होती है और योग अब पतित से पावन बनने की ही कला है। उनकी इस स्वीकृति में हमारा यह भाव भी समाया ही हुआ होगा कि योग का फल भोगने के लिए पवित्रता भी सम्पूर्ण चाहिए, सृष्टि भी सम्पूर्ण सतोगुणी हो, राजा-रानी भी सम्पूर्ण गुणवान हों तथा सुख और शान्ति भी सम्पूर्ण हो। इस प्रकार, 'सम्पूर्ण योग'—ऐसा जो नाम है, इस में 'राजयोग' भी समाया ही हुआ है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इतने समय से तो हम इसे 'राज योग' नाम देते आये हैं, अब हम इसे 'सम्पूर्ण योग' नाम कैसे दें? हमारे तो बहुत-से सेवा केन्द्र भी 'राज योग केन्द्र' नाम से ज्ञात हैं, क्या हम उन नामों को भी बदलें? हमारे एक संस्थान का नाम भी 'राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान' है, क्या उस नाम का भी परिवर्तन करें? ऐसा हमारा भाव नहीं है। 'राजयोग' शब्द की भी व्याख्या करके हम उसे 'सम्पूर्ण योग' के रूप में ही स्पष्ट कर देते हैं। अतः हमारा अभिप्राय उस व्याख्या से तो पूरा हो ही जाता है। परन्तु यदि हम अब इस नाम का अधिक प्रयोग करने लगें तो धीरे-धीरे हमारे इस नये एवं अद्भुत योग का अलग से नाम प्रसिद्ध हो जायगा।

पुनश्च, यदि विचार किया जाय तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि शिक्षा (Education) तो जीवन-भर चलती रहने वाली प्रक्रिया (life-long and continuing process) है। अतः जैसे-जैसे हम सीखते या अनुभव करते जाते हैं, वैसे-वैसे हम परिवर्तन, संशोधन और उन्नति भी करते जाते हैं। अतः जैसे शिक्षा एक चलते रहने वाली प्रक्रिया है वैसे ही परिवर्तन भी। परन्तु न्यूनतम इतना तो हो ही सकता है कि जैसे हम राजयोग के बारे में स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि यही 'ज्ञान योग' है, 'कर्म योग' है···, वैसे ही हम निष्कर्ष में यह तो कह ही सकते हैं कि यह 'सम्पूर्ण योग' है?

—जगदीश

गीत

(ब्र० कु० मोहन)

युगों में पुरुषोत्तम युग संगम है जिसका नाम
इस युग में सृष्टि पर आते हैं शिव भगवान
१—इस युग में सृष्टि का रचता ब्रह्मा तन में आता है
बूढ़े ब्रह्मा तन के द्वारा दुनिया नई बनाता है
निराकार साकार द्वारा करता है सबका कल्याण
ओ मीठे शिव भगवान ओ प्यारे शिव भगवान·····युगों में
२—संगमयुग आत्मा का परमात्मा से मिलन कराता है
भाग्यविधाता इस युग में सबका भाग्य बनाता है
इसी समय शिव पिता से हमें मिलते हैं अमर वरदान·····युगों में
३—चेतन रूप में देव देवियाँ यहाँ तपस्या करते हैं
भक्तों की सब कामनायें यहाँ ही पूर्ण वो करते हैं
मुक्ति जीवनमुक्ति का मिलता यहाँ लक्ष्य महान·····युगों में
४—गीता का आदि ज्ञान दाता शिव इस युग में आते हैं
सर्व शास्त्रों के सार का ज्ञान शिव बाबा से मिलता है
जन्म जन्मान्तर की भक्ति का फल मिलता है महान·····युगों में

युवा-वर्ष में युवा प्रधानमंत्री का चिन्तन

२१ वीं सदी के लिए आवाहन का व्यापक सन्दर्भ

—रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

२१ वीं सदी के लिए आवाहन का महत्व असाधारण है। विगत कुछ शताब्दियों और दशकों में तमाम बड़ी-बड़ी बातें हुई हैं, किन्तु वे सभी इसके सामने छोटी पड़ जाती हैं। विज्ञान और तकनीक की क्रान्ति तो हो ही रही है, किन्तु उसे सार्थक मूल्य और रचनात्मक गति देने के लिए जीवन और जगत के दिव्य रूपान्तर की एक कहीं व्यापक क्रान्ति भी चुपचाप सम्पन्न हो रही है। इसी सन्दर्भ में १९ वीं सदी के भारतीय नव-जागरण और २० वीं सदी के एतिहासिक घटनाक्रम का उल्लेख करते हुए यहां इस लेख में २१ वीं सदी के बहुआयामी व्यापक विशद् सन्दर्भ को स्पष्ट किया गया है।

—सम्पादक

युवा प्रधान-मंत्री माननीय राजीव जी ने देश-वासियों का आवाहन किया है कि २१वीं सदी में प्रवेश करने के लिए, अर्थात् एक नये युग में पदार्पण करने के लिए, हम स्वयं को तैयार करें। भारत के लिए यह मात्र संयोग नहीं है, वरन् एक एतिहासिक महत्व की घटना है कि युवा वर्ष में इस देश में युवा-नेतृत्व का उदय हुआ है और यह नया नेतृत्व कुछ नया सोच रहा है तथा नयी कल्पनाओं से प्रेरित एवं नयी आकांक्षाओं से अनुप्राणित है।

इस नवीन स्थिति को पूरे सन्दर्भ के साथ समझने के लिए हमें भारत के आधुनिक इतिहास में झाँकना होगा। आज से दो सौ साल पहले, सन् १७८४ में सर विलियम जोन्स और उनके मित्र सह-योगी अंग्रेज़ बुद्धिजीवियों ने भारतीय इतिहास तथा उत्तराधिकार के अध्ययन के लिए बंगाल एशिया-टिक सोसाइटी की स्थापना की। इस सोसाइटी ने अपने भगीरथ प्रयास से भारत का समूचा इतिहास अनावृत करके स्वयं हमारे तथा संसार के सम्मुख रख दिया। सोसाइटी के कार्यों के माध्यम से ही महामति चाणक्य, भारत-सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य और इतिहास-युग की भारत की समग्र गौरव-गाथा को हम सभी यथार्थ रूप में जान-पहचान सके। इसका सुपरिणाम यह रहा कि शिक्षा के क्रमिक प्रसार के साथ-साथ भारत ने स्वयं को पह-चाना, अपने सम्मान और आत्म-गौरव में हम जाग्रत हुए और वह पृष्ठभूमि बनी जिसके फल-स्वरूप १९वीं सदी की प्रसिद्ध नव-जागरण की लहर भारत में आयी।

१९वीं सदी के भारतीय नव-जागरण की सर्व-प्रमुख उपलब्धि यह रही कि १८८५ में बम्बई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। कांग्रेस के मंच पर अन्ततः गांधीजी के नेतृत्व का उदय और आविभाव हुआ जिन्होंने अपनी अहिंसा की नीति और सत्याग्रह की अभिनव कार्य-पद्धति से भारत को स्वाधीन कराने का संकल्प लिया तथा २०वीं सदी के मध्य के आते-आते उसे चरितार्थ भी कर दिया। भारत की स्वाधीनता की भी अपनी विल-क्षण कथा रही है। महात्मा गांधी ने, योगी अरविन्द घोष ने, विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने और अन्य प्रमुख भारतीय नेताओं ने अपने-अपने ढंग से यह कथ्य एवं तथ्य जोरदार शब्दों में प्रस्तुत किया कि भारत की स्वाधीनता केवल इस देश के लोगों के लिए ही नहीं होगी, वरन् इसके माध्यम से संसार की समस्त पीड़ित-पराधीन मानवता की स्वाधीनता का पथ प्रशस्त होगा और यह संसार में एक नयी विश्व-व्यवस्था (New world order) की स्थापना का निमित्त एवं साधन बनेगी। यहाँ पुनः हमें विलियम जोन्स महोदय के प्रति सादर

कृतज्ञता प्रकट करनी होगी जिन्होंने अपने अथक परिश्रम और अगाध ज्ञान से इस आशय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया—आरम्भ में एक ही जाति थी जिससे अनेक जातियाँ निकली हैं, आरम्भ में एक ही भाषा थी जिससे अनेक भाषाएँ निकली हैं, आरम्भ में एक ही अध्यात्ममूलक धर्म था जिससे आज के अनेक धर्म निकले हैं।

यह सर्वविदित है कि भारत की चिन्तन-धारा अनादि काल से ही एकात्मक, विश्ववादी और मानवतावादी रही है। अतएव, यह बिलकुल स्वाभाविक ही था कि १९वीं सदी के भारतीय नव-जागरण के क्रम में और २०वीं सदी में स्वाधीनता के संघर्ष तथा स्वाधीनता प्राप्ति के क्रम में यह एकात्मक और अध्यात्ममूलक चिन्तन-धारा स्वयं पुनः उभर कर सामने आती और पुनः दृढ़तापूर्वक अपने को स्थापित-प्रतिष्ठापित करती। अस्तु, विलियम जोन्स महोदय के उपर्युक्त निष्कर्ष की ही परिपुष्टि में भारत के भूतपूर्व विद्वान् और मनीषी राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने यह अभिमत प्रकट किया कि, 'आरम्भ में मानवता को एक ही जाति थी और वह दिन अब दूर नहीं है जबकि संसार की समस्त मानवता पुनः एक जाति में रूपान्तरित एवं परिवर्तित हो जायेगी।' डा० राधाकृष्णन् के इस शुभ चिन्तन और भद्रभाव को आगे बढ़ायें तो कहना पड़ेगा कि मानवता जब एक जाति में पुनः सूत्रबद्ध किंवा एकीकृत होगी तब स्वाभाविक क्रम में उसकी एक ही भाषा रह जायगी, उसका एक ही धर्म रह जायगा और उसका एक ही सर्वथा एकात्मक विश्व राष्ट्र-राज्य संगठित हो जायगा।

संयुक्त राष्ट्रों (United Nations) द्वारा यद्यपि स्पष्ट रूप से उपर्युक्त ढंग की कोई बात नहीं कही जाती तथापि उनका समग्र प्रयास मानवीय एकता के आदर्श की प्रतिष्ठा की दिशा में ही विनियोजित है। साथ ही यह भी एक तथ्य है कि यह प्रयास जितना ही रचनात्मक है उतना ही सशक्त और व्यापक विशद भी है। यथार्थ रूप में देखा जाय तो संयुक्त राष्ट्रों के संगठन का निर्माण, अस्तित्व और कार्य-कलाप एक मानव जाति, एक मानवीय शाश्वत-सनातन धर्म, एक मानव भाषा और एक मानव संघ राज्य के आदर्शों की स्वीकृति ही है। संयुक्त राष्ट्रों द्वारा, उनके मंच से, ऐसे प्रत्येक आन्दोलन को निर्बाध समर्थन प्रदान किया जाता है जो मानवीय एकता तथा सौहार्द के प्रति समर्पित है। इसी भद्र भावना से संयुक्त राष्ट्रों ने अपने अशासकीय संगठन से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउण्ट आबू को सम्बद्ध किया है, जो कि स्पष्टतः सम्पूर्ण विश्व के लिए एक जाति, एक भाषा, एक धर्म और एक राष्ट्र-राज्य के आदर्श के प्रति समर्पित एवं निष्ठाबद्ध है। इस आध्यात्मिक संगठन (Spiritual University) की ऐसी सहज-स्वाभाविक एवं निष्ठाबद्ध मान्यता है कि २१वीं सदी किंवा नयी सहस्त्राब्दि के उदय और आगमन के साथ जिस श्रेष्ठाचारी दैवी मानवता या देव-जाति का और श्रेष्ठतम नयी विश्व-व्यवस्था (World Order) का आविर्भाव होगा वह एक विश्व धर्म, एक विश्व-जाति और एक विश्व-भाषा के आदर्शों पर प्रतिष्ठित होंगी।

सम्पूर्ण कथन का सारांश यह कि हमारे भारतीय राष्ट्र-राज्य के युवा प्रधान-मंत्री राजीव गांधी महोदय ने २१वीं सदी के लिए आज हमारा जो आवाहन किया है वह मात्र कोई संयोग नहीं है। वास्तव में उसकी पृष्ठभूमि में बंगाल एशियाटिक सोसाइटी से लेकर १९वीं सदी के भारतीय नव-जागरण, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय तक की भाव-धारा तथा विचार-धारा की सम्पूर्ण विकासशीलता और गतिमत्ता विद्यमान है। कुल मिलाकर यह विचार-धारा और भाव-धारा हमें चिरप्राचीन दैवी संस्कृति और उसकी उत्तराधिकारिणी वैदिक संस्कृति की मान्यताओं से जोड़ती है और उन मान्यताओं की सार्थकता एक बार पुनः जगत के सम्मुख सिद्ध करती है। वे उदात्त मान्यताएँ इस प्रकार हैं—१. विश्व एकात्मक निवास है, २. विश्व

मानवता एक परिवार है, ३. संसार एक सृष्टि-चक्र के रूप में परिचालित है, ४. इस सृष्टि-संचालन-प्रक्रिया का एकमेव अधीश्वर परमात्मा है, ५. परमात्मा अपनी योग-शक्ति से और अपने उद्घाटित ज्ञान से 'यथा-पूर्वमकल्पयत्' यथासमय सृष्टि-जगत का नव-निर्माण कार्य सम्पन्न किया करते हैं।

द्रष्टाओं का ऐसा अभिमत है कि २१वीं सदी के आगमन के साथ समूचा विश्व एकबारगी बदल जायगा। इनके मतानुसार यह परिवर्तन शुभ दिशा में होगा; यह एक ऐसा युग-परिवर्तन होगा जो शांति और सुख के युग का अवतारणा करेगा। गांधी ने इसे आदर्श रामराज्य के रूप में देखा है। रवि ठाकुर ने 'स्वतंत्रता के स्वगलोक' में भारत के नवोदय की परिकल्पना की है। अरविन्द ने समस्त संवेगों और भावनाओं समेत जीवन तथा जगत के 'दिव्य रूपान्तर' (Sublimation or Divinisation) के घटित होने की बात कही है। सृष्टि-जगत में शुभ-परिवर्तन लाने के लिए भागवत् हस्तक्षेप और भगवान के कार्य को सभी ने अपने-अपने ढंग से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। किन्तु सबसे सहज-सरल स्पष्टीकरण प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से उद्घाटित इस प्रकार के ईश्वरीय महावाक्यों से होता है कि, 'कलियुग जा रहा है। सतयुग आ रहा है।' सृष्टि का इतिहास स्वयं को दोहरा रहा है। पृथवी पर पुनः देव-समाज और दैवी संस्कृति ही नयी सहस्त्राब्दि की नियति है। यह है २१वीं सदी के लिए आवाहन का विशद और व्यापक सन्दर्भ।

○

युवा वर्ष पर युवा वर्ग को आह्वान

ब्र० कु० मुचकुंद रायपुर, (म० प्र०)

युवा वर्ग तू, जाग जाग।
दुख को दुनिया से तू भगा दे,
सुख का रास्ता जग को दिखला दे।
बुराइयों से तू, भाग भाग,
युवा वर्ग तू, जाग जाग।

शक्तिवान तू, बुद्धिवान है,
जग परिवर्तन में, सामर्थ्यवान है।
आलस्य को तू, त्याग त्याग,
युवा वर्ग तू, जाग जाग॥

सत्य ही तेरा, सच्चा स्वधर्म है,
प्रेम ही तेरा अणु अस्त्र है।
हिंसा को समझ तू, आग आग,
युवा वर्ग तू, जाग जाग॥

तू बजरंगी, तू हनुमान है,
तू ही अंगद, देव समान है।
बन जाये जग, बाग बाग,
युवा वर्ग तू, जाग जाग॥

आध्यात्मिक-ज्ञान..... (पृष्ठ २५ का शेष)

परमपिता परमात्मा युवा में फिर से नव जागृति—आध्यात्मिक वरदानों की शक्ति भरने, मानव मात्र का उद्धार करने एक साधारण मानव तन का आधार ले फिर से इस धरा पर दिव्य अलौकिक अवतरण लेते हैं। सहज राजयोग और आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा मानव के कर्म, कमल के समान न्यारे और प्यारे बना देते हैं।

अतः मानव जाति के नव-युवक, युवतियों के प्रति परमात्मा का यही फरमान है—मीठे बच्चो, पवित्र बनो—सहज राजयोगी बनो, महान् बनो—कल्याण करो।

तो आओ मेरे युवा भाई-बहनो, हम सब मिलकर फिर से विश्व में एकता और सत्यता के आधार पर विश्व-नव-निमर्णा का कार्य सहज और सरल रूप से करने में सच्चे सहयोगी बन अपने प्यारे पिता परमात्मा का अरमान पूरा करें।

○

नर्क और स्वर्ग को जोड़ने वाला पुल

ब्र० कु० सुजाता, मंगलूर

प्रभात के सूरज की पीली किरणें धरती पर बिखरी हुई थीं। चहुँ ओर आसमान में उषा अपना आँचल फैलाए हुए थी। दूर लाइन में खड़ी पर्वत-शिखरें आकाश को चूमने की कोशिश कर रही थीं। हरी भरी घास का मानों धरती ने हरा शाल लपेट लिया था। झर-झर झरते हुए मंजुल झरने, कल-कल नाद करती जल धाराएँ, स्वच्छन्द सरोवर—इधर-उधर खिले हुए कमल फूलों से सरोवर की शोभा और ही बढ़ रही थी। हंस का जोड़ा उस शान्त वातावरण में पवित्रता को सिद्ध कर रहा था। सरोवर के किनारे फलों से सजे वृक्षों की कतार, मंद शीतल पवन फूलों की सुगन्धी को फैला रहा था। वृक्षों के पत्ते हिल रहे थे तो रंग-बिरंगे फूलों के पौधे डोल रहे थे, जिससे सूँ···ऽ ···ऽ···सूँ की रट लगी हुई थी। कितना सुहावना दृश्य !

कभी कोयल की कूक, तो कभी पोपट के मिठू-मिठू की मीठी बोली, तो कभी पाखरू की किल-विल सुनाई दे रही थी जो अपने बच्चों से विदाई ले रही थी। सब मिलकर मधुर संगीत सा लग रहा था। मन गुनगुनाने लगा—"जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़ियां करती हैं बसेरा···वो भारत देश है मेरा।"

एक तरफ मयूर का मदमस्त नृत्य और खरगोश का अनोखा खेल तो दूसरी तरफ दौड़ते हुए सुनहरी-तपकिरी हिरन दिखाई दे रहे थे। चिट-कले सुन्दर परवाने फूलों से मधुरस पी रहे थे। कितना मन लुभाने वाला दृश्य था ! गायें घास खा रही थीं तो सिंह प्यास बुझा रहे थे। उनमें क्रूरता के बजाय गम्भीरता दिखाई दे रही थी। हाथी अपने सूँड में पानी लिए उन पर पुचकार रहा था। सोने की नौका में प्रसन्नचित्त देवताएँ जलविहार कर रहे थे। कितना आकर्षक दृश्य था वो ! इसीलिए कवि ने कहा है—"जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का पगपग लगता डेरा···वो भारत देश है मेरा।"

उस रमणीय प्रकृति को देखते-देखते आँखें भर आईं और वह आँखों से ओझल हो गया। होश में आते ही मन मुरझाने लगा, सोचने लगी अभी भी वही धरती, वही आकाश, वही चाँद-सितारे, वही मनुष्य, वही जानवर, वही प्रकृति···वही सब कुछ होते हुए भी इतना फरक क्यों ? बार-बार प्रश्न उठने लगा—आखिर इतना फरक क्यों ?

जो उन मानवों में पवित्रता-सुख-शान्ति भरी थी वह अब नहीं रही, जो सात्विकता उन जानवरों में दिखाई दे रही थी वह अब नहीं दिखाई देती, जो उस प्रकृति में सतोप्रधानता थी, वह जगह अब तमोप्रधानता ने ली है। जब मानव देवमानव था तब सम्पत्ति, समृद्धि, सम्पन्नता, सौन्दर्य सब कुछ था, अब मानव ने दानव बनने कारण सब कुछ गँवाया है। मानव बदला तो सब कुछ बदला। जब मानवात्मा सतोप्रधान थी तो प्रकृति भी सतो-प्रधान थी और चहुँ ओर रहने वाले जानवर भी सात्विक थे। अब आत्माके पार्ट बजाते-बजाते तमो-प्रधान होने से प्रकृति भी तमोप्रधान बनी है। सब राव से रंक बन गये। हीरे जवाहरातों को पहनने वाले मनुष्य को अब कपड़ा पहनना भी मुश्किल हो गया है। सोने-चाँदी के महलों में रहने वालों को अब मिट्टी का महल बनवाना भी मुश्किल हो गया है। जहाँ दूध-दही की नदियाँ बहती थीं वहाँ अब सूखी रोटी के लिए तड़प रहे हैं। जब विश्व में देवताओं का राज्य था तब इसी भारत भूमि पर स्वर्ग था अब असुरों का राज्य होने के कारण सारा विश्व नर्क बन पड़ा है। यही स्वर्ग था यही नर्क है। अब फिर से यहीं पर स्वर्ग की स्थापना हो रही

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सहनशीलता

ब्र० कु० ओमप्रकाश, बांदा

लगभग २२५० वर्ष पूर्व की घटना है बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध के तीन शिष्य उनके पास पहुँचे और उनसे हाथ जोड़कर कहा, "गुरुवर ! हमारी शिक्षा पूर्ण हुई। अब आप हमें धर्म प्रचारार्थ निकलने हेतु आज्ञा प्रदान करें।"

तपस्वी बुद्ध ने कहा, "वत्सो, ठीक है, कल आना, धर्म प्रचारार्थ निकलने से पूर्व तुम लोगों की परीक्षा होगी।" दूसरे दिन तीनों शिष्य अपनी परीक्षा देने हेतु उपस्थित हुए तो महान् बुद्ध ने पहले शिष्य से पूछा "प्रिय आत्मन, तुम धर्म प्रचार हेतु निकल रहे हो, यह बताओ यदि धर्म प्रचार करते तुम्हें कोई गालियाँ दे, तो तुम क्या करोगे ? शिष्य ने उत्तर दिया, "श्रीमन, मैं यह सोचते हुये उन्हें सहन कर लूँगा कि उन्होंने मुझे मारा तो नहीं है।"

दूसरे शिष्य के सामने आने पर उन्होंने पूछा, "धर्म प्रचार करते समय यदि तुम्हें कोई मारना शुरू कर दे तो तुम क्या करोगे ?" शिष्य ने उत्तर दिया, "श्रेष्ठ गुरुवर, मैं यह सोचते हुये मार को सहन कर लूँगा कि उन्होंने मुझे जान से तो नहीं मारा।"

तीसरे शिष्य से उन्होंने पूछा, "तुम धर्म प्रचार हेतु निकल रहे हो, यदि ऐसे समय लोग तुम्हें जान से मारने लगें तो तुम क्या करोगे ?" शिष्य ने उत्तर दिया, "महात्मन ! मैं निश्चल रहकर यह सोचते हुये इसे सहन कर लूँगा कि मैं तो धर्म प्रचार जैसे श्रेष्ठ कार्य को कर रहा हूँ यदि इससे मौत भी हो जाये तो भी स्वर्ग की प्राप्ति होगी।"

उपरोक्त बातें सुनने में तो बहुत आसान लगती हैं किन्तु क्या वास्तव में ऐसी परिस्थितियाँ स्वयं अपने साथ घटित हों तो हम सहनशीलता बरत सकते हैं।

मेरे मन में बराबर ये प्रश्न उठते ही रहते कि वास्तव में किसी की गलतियों को क्षमा करने के लिये तो बहुत शक्ति चाहिये फिर आखिर ऐसी सहन करने की शक्ति मिलती कहाँ से है। किस प्रकार का चिन्तन मन, बुद्धि में होना चाहिये कि जब ऐसी विकट स्थिति अपने साथ आये, तो उनका पूर्ण अहिंसक रीति से सामना किया जा सके।

मुझे ये बातें तब तक अव्यावहारिक व असम्भव सी लगती रहीं, जब तक कि मैं स्वयं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी बहिनों के सम्पर्क में नहीं आया। तो आप पाठकगण भी समझिये मेरे प्रश्नों व बहनों के उत्तरों से किस प्रकार ऐसी विकट स्थितियाँ आने पर हम उनका सामना सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

लेखक : बहन जी आप जब शिवबाबा का सन्देश सुनाने निकलती होंगी, तो तमाम लोग आप लोगों की आलोचना करते होंगे, भला बुरा भी कहते होंगे, यहाँ तक कि हिंसात्मक शब्दों द्वारा अपमानित भी करते होंगे, तो ऐसी स्थिति का सामना आप लोग कैसे करती हैं।

ब्र० कु० : पहली बात तो यह है कि शिवबाबा ने हमें बच्चों को ज्ञान से इतना भर दिया है कि जब भी लोगों से मिलती हैं, हृदय में इतना प्रेम लिये मिलती हैं कि हमारे सामने ऐसी अपमानजनक स्थिति ही नहीं आती। किन्तु ऐसी स्थिति आने पर तो हम बाबा के इन महावाक्यों का ही सहारा लेती रहीं, **"हम स्वयं ही अपने मित्र हैं व स्वयं ही अपने शत्रु हैं।"** इसके बाद हमारा चिन्तन यही चलता कि यह भाई जो हमें जो भी बातें कह रहे हैं इसमें इनकी कोई भूल नहीं है, हमारी ही कोई भूल

होगी, फिर सोचती वर्तमान की तो कोई भूल दिखती नहीं, तो जरूर पिछले जन्मों की कोई भूल होगी, उसी का बदला ये ले रहा होगा। आगे हम सोचतीं, हमारा कर्म-खाता चुकता हो रहा है, अब इन्हें प्रति उत्तर में भलाबुरा कहकर हमें नया-खाता नहीं खोलना है, जीवन बन्ध में नहीं आना है। आखिर यह सामने वाला हमारा भाई ही तो है, चलो इसने इतनी बात कह ली तो क्या हुआ। यह तो अज्ञानी है, हम तो ज्ञानवान शिव शक्तियाँ हैं। हमें इनकी अज्ञानता की बीमारी को सहन करना है व ज्ञान दान देकर इसके रुहानी इलाज के निमित्त बनना है। हमें तो इनके प्रति क्रोध नहीं करना है बल्कि इनके प्रति तो दया का भाव होना चाहिये। ऐसा सोचकर हम सब सहन कर लेती और गुस्से के स्थान पर खुशी का भाव आ जाता।

प्रश्न २ : बहन जी यदि धर्म प्रचार करते आपको कोई क्रोधवश थप्पड़ मार दे, तो आप क्या करेंगी ?

ब्र० कु० बहन : भ्राता जी एक तो ऐसी घटना हम बाबा के बच्चों के साथ हो नहीं सकती और यदि ऐसी कोई स्थिति आ भी जाये तो भी हम यह सब यह सोचते हुये सहन करेंगी कि यह भी तो शिव-बाबा का बिगडेल दिल बच्चा है, यह तो हमें नहीं हमारे शरीर को मार रहा है। मैं शरीर तो नहीं हूँ बल्कि शरीर को चलाने वाली शान्तिस्वरूप आत्मा हूं। हमें तो सब कुछ सहन करना है, हम भी इसके प्रत्युत्तर में यदि झगड़ा करेंगी तो और अशान्ति फैलेगी।

आखिर हमें तो बाबा का शान्ति का सन्देश समस्त विश्व को देना है। बाबा के कार्य के लिये हमें सब कुछ सहन करना है। इस भाई को अवश्य कोई गलतफहमी हुई है अथवा हो सकता है हमारी ही कोई भूल हो, जिधर हमारा ध्यान न गया हो। बिना कारण ऐसा व्यवहार तो यह कर नहीं सकता। हमारी अवश्य कोई न कोई भूल होगी। एक हाथ से ताली बजती नहीं। अवश्य हमारी कोई भूल होनी ही चाहिये। ऐसा सोचकर हम शान्त रहती, अपनी भूल खोजती, तो हमें अपनी भूल का अहसास हो जाता। तो हम यह सोचती कि शिवबाबा तो हमें पूर्ण बनाने आया है, तो हमें पूर्णता प्राप्त करनी है। आगे से हमें कोई गलती नहीं करनी है, किन्तु बाबा की याद में रहकर सेवा कार्य में जुटा रहना है। श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति ही हमारा स्वधर्म है। स्वर्ग प्राप्ति जैसे सुखद भविष्य की याद ऐसी कठिन परिस्थितियों से भी सामना करने की शक्ति प्रदान करेगी।

लेखक प्रश्न ३ : "बहिन जी क्या आप लोगों के समक्ष कभी ऐसी स्थिति नहीं आई, जब लोग आप लोगों को जान से मारने पर आमादा हो गये हों और यदि ऐसी स्थिति आई तो ऐसी स्थिति का सामना कैसे किया गया ?"

ब्र० कु० बहन : ऐसी स्थिति यज्ञ की स्थापना के समय सिन्ध हैदराबाद में आयी थी। जब ब्रह्मा बाबा के साथ बहनों ने रहने का निश्चय किया तो कई बहनों के लौकिक परिवार वालों ने गुस्से में यही सोचा कि क्यों न इनके ब्रह्माबाबा को ही समाप्त कर दिया जाये, तो न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

ऐसी विकट स्थिति में भी हम सभी ब्रह्माबाबा के साथ इस निश्चय के साथ डटी रहीं कि हम तो अजर अमर अविनाशी आत्मायें हैं, शरीर तो विनाशी है, उसे तो ऐसे भी एक दिन छोड़ना ही है, तो शिवबाबा के विश्व में शान्ति की स्थापना जैसे महान कार्य करते यदि यह शरीर छट भी जाये तो भी हमें २१ जन्मों के लिये सुख, शान्ति, पवित्रता का वरसा मिलेगा ही। आने वाले सत-युगी दैवी स्वराज्य में श्रेष्ठ पद पाने के अधिकारी हम बनेंगे।

हम सोचती हम तो बिन्दु रूप ज्योति स्वरूप आत्मा हैं, हम कभी मरती नहीं, केवल समयानुसार शरीर रूपी वस्त्र बदलती हैं। हो सकता है आज ही शरीर रूपी वस्त्र बदलने का समय हो, इन्हें हो

(शेष पृष्ठ १२ पर)

'शरीर और आत्मा'

ब्र० कु० रेवादास, बिलासपुर (हि० प्र०)

आत्मा चेतन है, शरीर जड़ है। संसार में जितनी भी जड़ चीज़ें हैं वे सभी चेतन के प्रयोग के लिए हैं। अतः शरीर भी आत्मा के लिए है न कि आत्मा शरीर के लिए, 'मैं चेतन आत्मा हूँ' इस स्मृति की अनुपस्थिति में हम स्वयं को देह मानते चले आ रहे थे। परिणामस्वरूप हमारा प्रत्येक संकल्प, वचन तथा कर्म देहभान पर आधारित था। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त स्वयं को शरीर समझने के कारण हम सब कुछ शरीर के लिए करते रहे थे। शारीरिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए हमने अपना तन-मन-धन लगा दिया। प्रातः उठने से लेकर रात सोने तक हम सारा ध्यान और समय शरीर पर ही देते रहे! प्रातःकाल से ही शरीर को हृष्ट-पुष्ट, तरो-ताज़ा एवं स्वच्छ बनाने के लिए हम व्यायाम करते, नहलाते-धुलाते और स्वच्छ वस्त्र धारण कर कंघा-शीशा करते। तत्पश्चात् काजल-क्रीम लगा कर और भी जो शरीर की सजावट के टिका-विन्दी, जेवर आदि होते उनसे शारीरिक सजावट करते! फिर चाय-नाश्ता भी शरीर के लिए करते और दिन भर जो भी काम-धन्धा करते वह भी शरीर निर्वाह अर्थ ही करते! अर्थात् हमारा खाना, पहनना, सोना, बैठना, धन संग्रह करना, पढ़-लिख कर उच्च पद प्राप्त करना, मकान, जमीन-जायदाद बनाना इत्यादि सभी क्रियाएँ शरीर के वास्ते की होती रहीं। शरीर के द्वारा इन चीज़ों का उपयोग करने वाला जो चेतन आत्मा है उसके प्रति समय और ध्यान शून्य हो गया। फलतः चेतन आत्मा जड़ शरीर में खो गया! जब आत्मा स्व-विस्मृत हो गया तब स्वधर्म, स्वरूप, स्वलक्ष्य, स्वधाम सब कुछ खो गया। इसका भयंकर परिणाम निकला अशान्ति, तनाव, परेशानी, कष्ट, कलह और सम्पूर्ण दुःख। अब चेतन आत्मा इन दुःखों से छुटकारा पाने के लिए अनेक उपाय करने लगी! परन्तु दुर्भाग्य कहें या अज्ञानता, आधा कल्प (२५०० वर्ष) से आत्मा ने जो भी उपाय किये, वे सब भी शारीरिक क्रियाओं पर आधारित थे जिसके परिणामस्वरूप दुःख में अन्ततोगत्वा और वृद्धि हुई। परिणाम का इलाज किया जाने लगा। कारण को अछूता छोड़ दिया गया। शरीर में फोड़ा हो गया, उसकी चिकित्सा की गई। 'फोड़ा क्यों हुआ, आगे के लिए न हो' इन मूल कारणों की अवहेलना कर दी गई। फिर आरम्भ हुई चिकित्सा प्रणाली। एक रोग का निदान दूसरे की उत्पत्ति का कारण बना। रोग बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। कारण—सब कुछ शरीर के लिए, शरीर द्वारा, शरीर के भान में किया गया। 'बिना कारण के कोई कर्म नहीं—बिना कर्म के फल नहीं' इस पद्धति के अनुसार कारण का निवारण अनिवार्य था। परन्तु कारण का ज्ञाता देहधारी मनुष्य नहीं हो सकता था। परमात्मा शिव ही ज्ञान सागर है। उन्होंने सरल शब्दों में कठिन मार्ग को सर्वजन हिताय सुगम बना दिया। शरीर को आत्मा से अलग कर दिया। रोग आत्मा में निकला। जड़ पकड़ ली गई। अब पानी पत्ते-पत्त के बजाय जड़ में दिया जाने लगा। कारण ज्ञात हो गया। निवारण सरल हो गया। आत्मा विकारों से पूर्ण ग्रस्त छटपटा रही थी। योग्य चिकित्सक रूहानी सर्जन ने ज्ञान दवाई पिलाई। निरन्तर याद का टानिक दे दुर्बल आत्मा को शक्तिशाली बनाया। रोग का सही निदान हो गया। आत्मा शनैः शनैः स्वस्थ होने लगी और अन्ततोगत्वा पूर्ण पवित्र बन गई। विकर्म का कारण (देहभान) ही नहीं रहा फिर विकर्म कैसे

बन सकता था और जब विकर्म नहीं फिर बुरा फल दुःख रोग आदि भी नहीं रहा। दुःखी संसार सम्पूर्ण सुखी संसार में परिवर्तित हो गया। कलि-युगी नर्क डूब गया स्वर्ग सृष्टि पर स्वर्णिम युग के रूप में उभर आया। आत्मा की पवित्रता से शरीर भी कंचन हो गया। यह सब आत्मा की उन्नति के कारण हुआ।

अतः आज आवश्यकता है आत्म-उन्नति की। जब तक आत्मा पवित्र एवं शक्तिशाली नहीं तब तक शारीरिक दुःखों का स्थायी हल भी नहीं। शरीर और आत्मा का बैलेन्स तो होना ही चाहिए। जैसे शारीरिक रोगोपचार के लिए हम फौरन डाक्टर से परामर्श करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर हस्पताल में दाखिल भी हो जाते हैं वैसे ही अब समय आ गया है कि आत्मा में लगे इन भयंकर विकारों रूपी रोग को दूर करने के लिए फौरन रूहानी सर्जन (शिव बाबा) से परामर्श करें और रोग की जटिलता को देखते हुए रूहानी हासपिटल में दाखिल हो जाएँ! रूहानी इलाज के लिए बिना कौड़ी खर्च किए प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के भारत तथा विदेशों में स्थित लगभग १५०० सेवा केन्द्र प्रत्येक मनुष्यात्मा के लिए उपलब्ध हैं। जहाँ आत्म उन्नति की प्रतिदिन निःशुल्क शिक्षा दी जाती है और व्यक्ति को देहाभिमानी से देहीभिमानी बनाया जाता है जिसके फलस्वरूप आज लाखों नर-नारी गृहस्थ व्यवहार में रहते सम्पूर्ण सुख शान्ति का आनन्द प्राप्त कर रहे हैं और समस्त विश्व-आत्माओं को ऐसी ही शिक्षा देकर विश्वकल्याण का कार्य कर रहे हैं। □

सहनशीलता (पृष्ठ १० का शेष)

इसके निमित्त बनना हो तो इसमें घबराने जैसी क्या बात है।

यह जो हमारे अकल्याण की भावना के वशीभूत हो ऐसा दुष्कर्म करने की सोच रहे हैं, आखिर है तो हमारे भाई ही। हमें तो इनके प्रति भी कल्याण की भावना से ही सोचना है और मन-बुद्धि को अपने श्रेष्ठ लक्ष्य का स्मरण कर स्थिर रखना है। हम तो सम्पूर्ण अहिंसक शिवबाबा के बच्चे हैं, हमें लोगों की हिंसा का जवाब भी अहिंसा से ही देना है। हम तो शान्ति के सागर शिवबाबा के शान्ति स्वरूप बच्चे हैं। शान्ति ही हमारा स्वधर्म है। शरीर छूटता है छूट जाये, हमें तो अपना धर्म नहीं छोड़ना है।

हमारे इन श्रेष्ठ संकल्पों ने विरोध व हिंसा करने वालों का हृदय परिवर्तन किया और इसी कारण हम सब सुरक्षित रहे। हमने बाबा द्वारा बताये मार्ग पर चलकर अहिंसा द्वारा हिंसा पर विजय प्राप्त की।

शिवबाबा तो कहते हैं, मीठे बच्चे हिंसा से हिंसा को जीतने का तरीका ही गलत है। तुम बेहद के बच्चे हो तो तुम्हारे सहन करने की कोई सीमा नहीं। तुम्हें तो सब कुछ सहन करना है। बदला नहीं लेना, परन्तु स्वयं को बदलकर दिखाना है।

○

सूचना

अभी तक कई सेवाकेन्द्रों से ज्ञानामृत के सदस्यों की संख्या तथा शुल्क नहीं आया है। कृपया शीघ्र अतिशीघ्र सदस्यों की संख्या तथा शुल्क भेजें।

वार्षिक शुल्क—१८ रुपये।
अर्द्धवार्षिक शुल्क—१० रुपये।
शुल्क केवल ज्ञानामृत के नाम पर भेजें।

—व्यवस्थापक

कहानी

सेवा ही सर्वोत्तम

ब्र० कु० चक्रधारी बहन, दिल्ली

कहते हैं कि एक बार अकबर ने अपने राज दरबार में निम्नलिखित तीन प्रश्न किये और कहा कि जो इनका ठीक उत्तर देगा उसको काफी बड़ा इनाम मिलेगा।

१. सबसे अच्छा फूल कौन सा है ?

२. सबसे बड़ा राजा कौन सा है ?

३. सबसे अच्छा बेटा किसका है ?

दरबार में जो बुद्धिमान लोग थे, उन्होंने उत्तर देने की कोशिश की। किसी ने कहा कि सबसे अच्छा फूल गुलाब का है, किसी अन्य ने कहा कमल का फूल सबसे अच्छा है। दूसरे प्रश्न के उत्तर में सबने कहा कि अकबर ही सबसे बड़े और अच्छे राजा हैं क्योंकि वे चाहते थे कि महाराजा अकबर उनसे खुश हों। उन्हें यह डर भी था कि अगर वे अकबर को सबसे बड़ा और अच्छा राजा घोषित नहीं करेंगे तो वे उनसे नाराज़ भी हो जायेंगे।

तीसरे प्रश्न के उत्तर में भी लगभग सभी ने यही उत्तर दिया कि महाराज अकबर के सुपुत्र ही सबसे अच्छे हैं। क्योंकि उन्हें डर था कि अगर युवराज को मालूम हुआ कि अमुक व्यक्ति ने उनका नाम अच्छे राजकुमार के रूप में नहीं लिया तो वे उनके खिलाफ हो जायेंगे और समय आने पर सिंहासनारूढ़ होने पर शायद दुश्मनी भी निकाल लें।

राजा इन उत्तरों से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने समझ लिया कि ये प्रशंसा करने के लिए ही सामान्य उत्तर दे रहे हैं जिनमें न तो कुछ नवीनता है और न कुछ विचार की उत्तमता। इस प्रकार जब उन्होंने देखा कि उनके प्रश्नों का अभिप्राय तो पूरा हो ही नहीं रहा तब मुस्कुराते हुए उन्होंने बीरबल की तरफ देखा और कहा कि अब महाराज सुनना चाहेंगे कि इन प्रश्नों के बारे में बीरबल के क्या विचार हैं ? स्वाभाविक था कि अब सभी का ध्यान बीरबल की ओर केन्द्रित हो गया।

बीरबल ने मर्यादा और शिष्टाचार पूर्वक महाराजा को सम्बोधित करके कहा—महाराज, यों तो गुलाब व कमल अपनी-अपनी जगह पर सभी फूलों में अच्छे भी हैं और बड़े भी परन्तु मेरे विचार में सबसे बड़े व अच्छे फूल रुई के फूल हैं क्योंकि उनसे जो हमें रुई मिलती है और उससे जो कपड़े बनते हैं, उन्हें पहनकर एक व्यक्ति न केवल स्वयं को सर्दी-गर्मी से बचाता है बल्कि एक सुसभ्य इन्सान दिखाई देता है। उनके बिना तो आम इन्सान हैवान की तरह नंग-धड़ंग दिखाई देता है।

आपका जो दूसरा प्रश्न है, उसके विषय में मेरा मन्तव्य है कि राजाओं में सबसे बड़े इन्द्र हैं क्योंकि वे वर्षा करते हैं। यदि वे वर्षा न करें तो खेती नहीं होगी। खेती न होने से अनाज नहीं होगा और अनाज न मिलने से जनता भूखों मरेगी।

अब रहा आपका तीसरा प्रश्न अर्थात् यह प्रश्न कि सबसे अच्छा बेटा किसका है ? मेरे विचार में सबसे अच्छा बेटा गाय का होता है क्योंकि वह हल न चलाए तो खेती नहीं होगी। बेचारा घास और भूसा खाता है और वह भी अपनी पैदावार में से और मेहनत करके प्रजा का पेट भरने की सेवा करता है।

बीरबल के इन उत्तरों को सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और राज दरबार के अन्य सदस्यों को भी ये बातें बहुत अच्छी लगीं।

प्रश्न उठता है कि बीरबल के ये उत्तर सबको अच्छे क्यों लगे ? दूसरे शब्दों में बीरबल ने जिसको भी अच्छा या बड़ा माना, उसका क्या कारण है ?

विचार करने पर हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं

कि बीरबल ने जिनके नाम सुनाए, उनमें सेवा का गुण है। रुई का फूल सर्दी-गर्मी से बचाने की और सभ्य तथा सुन्दर दर्शाने की सेवा करता है, इन्द्र भूख मिटाने का प्रबन्ध करने की सेवा करता है और बल भरण-पोषण की।

इस दृष्टान्त से हम यह निष्कर्ष लेते हैं कि सेवा करने वाला ही सबसे बड़ा और अच्छा होता है। इसी बात को सामने रखते हुए ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा प्रायः अपने महावाक्यों में कहते कि ब्राह्मण वर्ण देवताओं से भी ऊंचा है क्योंकि ब्राह्मण ज्ञान वर्षा करके आत्मा की जन्म-जन्मान्तर की प्यास बुझाते हैं, उसे सुख शान्ति से भरपूर करते हैं और पशु तुल्य मानव से सुसभ्य और सुसज्जित देवता बनाते हैं। इसी के अनुसार प्रजापिता ब्रह्मा श्री नारायण से भी ऊँचे हैं क्योंकि यद्यपि श्री नारायण चक्रवर्ती राजा हैं तथापि नर को नारायण बनाने की सेवा तो प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही होती है। इस प्रकार हम अपने जीवन में यह शिक्षा धारण करते हैं कि हमें भी अपने जीवन में सेवा के गुण को अपनाना चाहिए। इसलिए ही शिव बाबा ने कहा है कि इस जन्म में सेवा का ताज पहनोगे तो सारे इतिहास में गायन योग्य बनोगे और भविष्य में भी पूज्य राज्य पद प्राप्त करोगे। □

नर्क और स्वर्ग को…… (पृष्ठ ८ का शेष)

है। लेकिन मनुष्य यह न जानने कारण समझते हैं नर्क कहीं नीचे पाताल में है और स्वर्ग कहीं ऊपर आकाश में है।

कई फिल्मों में स्वर्ग की कल्पना दिखाते हैं तो वे उसे आकाश के पार सफेद-नीले बादलों में चाँद-सितारों के साथ दिखाते हैं। परियों को सितारों से सजा सफेद पोशाक, बिखरे हुए बाल, चमकता मुकुट और दो पंख दिखाते हैं। खरगोश के छोटे से रथ में परियों की रानी बैठ सैर करते दिखाते हैं। लेकिन यह सब वर्तमान समय की बातें हैं। हम सब ब्र० कु० शिवबाबा [भगवान्] की परियाँ हैं। हम सफेद कपड़े पहनते हैं। भृकुटी के बीच में चमकता है अजब सितारा। हम सितारा बन सितारों से बातें करते हैं और सदा सितारों को ही देखते हैं। आत्मा रूपी सितारे का ज्ञान सारा बाबा ने हमें ही दिया है। हमें अब ज्ञान और योग रूपी दो पंख लगे हैं और बुद्धि से हम आकाश, चाँद-सितारों के पार सूक्ष्म वतन एवं मूलवतन का सैर करते हैं। हम ब्र० कु० इन पंखों के सहारे फिर से इस भारत भूमि पर स्वर्ग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। हम सब अब परियाँ बन भविष्य के लिये देवता पद पा रहे हैं। इसलिए यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय नर्क और स्वर्ग को जोड़ने वाला पुल (Bridge) है। इसे पार किये बिना अर्थात् ब्र० कु० बनने बिना कोई भी इस नर्क से स्वर्ग को जा नहीं सकते।

पाँच विकारों और तत्वों पर विजय

ले० ब्रह्माकुमार सत्यनारायण देहली

हरएक को स्वयं से पूछना चाहिए कि मैंने पाँचों विकारों और तत्वों पर कहाँ तक विजय प्राप्त की है? किसी भी समय मेरी अवस्था किस विकार द्वारा कहाँ तक हिलती है? जितना-जितना हम स्वयं पर यह ध्यान देंगे उतना-उतना हमारी अवस्था में स्थिरता आती जाएगी और फिर पाँच तत्त्व भी उसकी अवस्था को नहीं हिला सकेंगे। अतः इस ईश्वरीय मस्ती में रहना चाहिए कि "मैं तो सर्वशक्तिमान् और परमपवित्र परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ, मुझे पाँच विकार अब नहीं हिला सकते। स्वयं को ज्योति-बिन्दु रूप में स्थित करने से ही आपकी ऐसी मधुर अवस्था बन जायगी।

चिन्ता तेरी तभी मिटेगी जब चिन्तन में ले लो राम !

मनुष्य के जीवन की एक समस्या यह भी है कि मनुष्य को हर ब्याये दिन किसी-न-किसी बात की चिन्ता लगी रहती है। वह सोचता है कि—"पता नहीं मेरे बच्चे योग्य सिद्ध होंगे या नहीं। वे बड़े होकर हमारे साथ ठीक व्यवहार करेंगे या नहीं। हमारी जब वृद्ध अवस्था होगी, तब पता नहीं बच्चे हमें पूछेंगे भी या नहीं—बच्चों की शिक्षा, उनका रोजगार, उनके विवाह, आदि-आदि का कार्य हम ठीक प्रकार से निभा पायेंगे या नहीं ?" व्यापारी लोग सोचते हैं कि—"पता नहीं, हमारा व्यापार ठीक रीति से चलेगा या नहीं। कहीं हानि तो नहीं हो जायगी ? कहीं इन्कमटैक्स या सेल्स टैक्स के इंस्पेक्टर या स्वास्थ्य विभाग के इंस्पेक्टर या पुलिस के कई लोग तंग तो नहीं करेंगे ? हमने इसमें जो पैसा लगाया है वह डूब तो नहीं जायगा ?" अच्छा, इन बातों को भी हम छोड़ दें तो भला यह भी तो सोचने की बात है कि हमारा अपना भविष्य कैसा होगा ? क्या मरने के बाद हम नरक मे जायेंगे, पशु-पक्षी इत्यादि योनियों में तो नहीं भटकेंगे ? "क्या होगा, कैसे होगा" ?—यह प्रश्न मनुष्य के मन में सदा बना ही रहता है। कई लोग तो ज्योतिषियों के पास जाकर उनसे अपने बारे में पूछते हैं कि हमारा भविष्य क्या होगा ?

परन्तु विचार की बात है कि चिन्ता करने से लाभ क्या है ? मनुष्य को यह याद रखना चाहिए कि जैसा कर्म वह करेगा, वैसा ही फल होगा या तो जैसे कर्म उसने पहले किये हुए होंगे उनके अनुसार उसे फल मिलेगा। अतः होना तो वही है जो कर्मों के नियम के अनुसार होगा—तब चिन्ता किस बात की ? मनुष्य को चाहिए कि चिन्ता करने की बजाय अपने कर्मों पर ध्यान दे। यदि उसके कर्म अच्छे होंगे तो परिणाम भी अच्छा ही होगा। यदि पूर्व-कर्मों के कारण से वर्तमान पुरुषार्थ का फल भी अच्छा या मन-पसन्द नहीं निकलता तो भी चिन्ता करने से वह बदल तो जायगा नहीं। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि पूरे उत्साह से और मन लगाकर पुरुषार्थ करे और फिर जो परिणाम निकले उससे सन्तुष्ट रहे। चिन्ता रूपी चिता पर जलना तो निष्प्रयोजन ही स्वयं को दुःखी करना है।

चिन्ता करने से मनुष्य की स्मृति दुर्बल हो जाती है, उसका विवेक मन्द पड़ जाता है, उसकी निर्णय-शक्ति ठीक तरह से काम नहीं करती और वह तन्मयता से पुरुषार्थ नहीं कर पाता। इसलिए चिन्ता करने से काम बिगड़ता ही है क्योंकि मनुष्य शक्ति-हीन की न्यायीं अथवा उलझे हुए मनुष्य की तरह काम करता है। कहावत है कि—"संकल्प से सृष्टि बनती है।" अतः चिन्ता करने वाला मनुष्य उल्टा सोच-सोच कर उल्टा ही काम कर बैठता है और इसलिए, उल्टा ही परिणाम बन कर उसके सामने आता है। वह अपने ही संकल्पों से वातावरण में खराब स्पन्दन (Vibration or Waves) द्वारा बुरा परिणाम ले आता है। अतः निश्चिन्त होकर कर्म करने से ही मनुष्य को सफलता प्राप्त होती है क्योंकि निश्चिन्त अवस्था में मनुष्य पूरे मन से कार्य कर सकता है।

मनुष्य निश्चिन्त तभी हो सकता है जब वह शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा को याद करे। इसलिए कहा गया है कि—"चिन्ता तेरी तभी मिटेगी जब चिन्तन में ले लो राम !" अतः चिन्ता करने की बजाय तो मनुष्य को प्रभु का चिन्तन करना चाहिये क्योंकि इस पुरुषार्थ से मनुष्य को परमात्मा से सहायता भी मिलती है। प्रभु-चिन्तन अर्थात् ईश्वरीय स्मृति द्वारा मनुष्य का विवेक जागृत होता है, उसकी निर्णय शक्ति ठीक काम करती है, उसकी दृष्टि पैनी हो जाती है और उसे ईश्वरीय बुद्धि मिलती है। बुद्धि से ही तो सिद्धि होती है। यदि पूर्व-कर्मों के फलस्वरूप वर्तमान समय मनुष्य का कार्य बिगड़ भी जाय तो मनुष्य को प्रभु-चिन्तन के द्वारा ऐसी युक्ति मिलती है जिसके प्रयोग से वह उस बिगड़े कार्य को भी ठीक कर सकता है। यदि ऐसा भी न हो सके तो उसे सर्व-शक्तिमान परमात्मा से ऐसी शक्ति मिलती है कि वह उस परिणाम को सहन कर सके और आगे के लिए पुरुषार्थ कर सके।

मनुष्य को समझना चाहिए कि जीवन में उतार-चढ़ाव तो आते ही हैं। सूर्य को भी दिन-भर में तीन अवस्थाएँ होती हैं। इसलिए कहावत भी है कि—"रविहू

(शेष पृष्ठ १६ पर)

अनोखा 'शिव बाबा' और उसकी अनोखी महिमा

हर-एक मनुष्यात्मा की जन्म-जन्मातर की जीवन-कहानी में कोई-न-कोई ऐसी घड़ी आती है जब वह महसूस करती है कि हम सभी मनुष्यात्माओं से कोई ऊँची शक्ति है ज़रूर और उसका सहारा लिये बिना सद्गति होना भी असम्भव है। अतएव अत्यन्त दुःख के समय, असहाय होकर आखिर वह परमात्मा को ही पुकारती है और परमात्मा से उसे थोड़ी-बहुत प्राप्ति होती भी है। परन्तु परमात्मा से हमारा क्या सम्बन्ध है, इस आवश्यक बात को न जानने के कारण, मनुष्य को उससे स्थायी सुख की प्राप्ति नहीं होती जिसका वह बहुत ही इच्छुक है। वह स्वयं को दास, सेवक, बन्दा या गुलाम (slave) ही मानता है। अतः उसे परमात्मा से प्राप्ति भी उतनी ही होती है जितनी कि लौकिक नाते से दास को अपने स्वामी या सेठ से हुआ करती है। भाव यह है कि वह परमात्मा की सारी सम्पत्ति का अधिकारी नहीं होता जैसे कि एक बच्चा अपने पिता की सम्पत्ति का हुआ करता है। परमात्मा से उसका सम्बन्ध, मिलन और स्नेह उतना निकटता का नहीं होता जितना कि एक अच्छे वत्स का अपने प्यारे पिता से हुआ करता है। इस सारी भूल का कारण यह है कि मनुष्य को परमात्मा का परिचय नहीं है। उसे यह भली-भाँति ज्ञात नहीं है कि परमात्मा तो हमारे अति स्नेही, अत्यन्त प्रिय परमपिता, बाबा, अब्बा अथवा फ़ादर (Father) हैं और उनकी स्थायी सुख-शान्ति रूप सम्पत्ति पर हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। उफ़, आज मनुष्य सदा सुख देने वाले उस अनोखे शिव बाबा को नहीं जानता जो निराकार आत्माओं का निराकार बाबा है!

उस मीठे बाबा अथवा प्यारे परमपिता की हम जितनी महिमा करें उतनी थोड़ी है। उसकी महिमा अथवा उत्तमता की स्मृति मात्र से मनुष्यात्मा की अपनी स्थिति उच्च हो जाती है, दृष्टि ऊँची उठ जाती है, मन महान् हो जाता है और बुद्धि बलवान हो जाती है। उस परमपिता से मन की लग्न लगाने से ऐसा निराला अनुभव होता है, मनुष्य को ऐसी अलौकिक खुशी होती है और आत्मा को वह सच्चा सुख मिलता है कि जिसे अनुभवी ही जानता है। वास्तव में वही सुख मनुष्य-जीवन का सार है। जो मनुष्य-आत्मा उसकी सहज स्मृति अथवा सहज योग से आनन्द प्राप्त करती है और अपने जीवन में काया-कल्प अनुभव करती है, उसके मुख से सहसा परमात्मा की महिमा इन शब्दों में निकला करती है—"मेरे परमपिता, आप सचमुच पतित-पावन हैं, आपने मेरे पापों और तापों को हर के मुझ आत्मा का सारा कल्मष धो दिया है! आपने विषय सागर में डूबती हुई मुझ आत्मा को पार लगा दिया है, हे तारनहार पिता! आपने मेरी आंखों से माया की पट्टी खोलकर आज मुझे मार्ग दिखाया है, सद्गुरु! अहा, आज मैं अनुभव करता हूँ कि आप ही अनोखे बाबा हैं जो सदा के लिए सुख देने वाले हैं! आप प्रकाशस्वरूप, ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द के सागर, प्रेम के सागर, दिव्य बुद्धि के दाता, दिव्य दृष्टि विधाता, मुक्ति और जीवन्मुक्ति के दाता हैं। आपसे मिलकर मैं पूर्ण तृप्त हो गया हूँ। मेरी और कोई इच्छा नहीं रही क्योंकि आपका हाथ पकड़कर मैं रोग और शोक से, मृत्यु और दुःख से सदा के लिए छूट जाऊंगा।" वह अनुभव करता है कि परमपिता परमात्मा की महिमा अनोखी है जोकि अन्य किसी की नहीं हो सकती।

अब वह समय चल रहा है जब परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर ये अनुभव सहज ही प्रदान कर रहे हैं। अब हरएक आत्मा, यह अधिकार उस परमपिता से प्राप्त कर सकती है। □

चिन्ता तेरी तभी····· (पृष्ठ १५ का शेष)

की दिन-भर में तीन अवस्था होत।" अतः दिन तो बदलते ही रहते हैं, इसमें घबराने या चिंता करने की क्या बात है?

इसके अतिरिक्त, अब यह भी तो परमपिता परमात्मा शिव ने स्पष्ट कर दिया है कि 'नरक' इसी मनुष्य-लोक का ही नाम है और मनुष्यात्मा पशु-योनियों में जन्म नहीं लेती बल्कि अपने कर्मों का फल मनुष्य-योनि में ही भोगती है। अतः अब पशु-योनियों में पुनर्जन्म की चिन्ता न करके अपने इस मनुष्य-जीवन में किये कर्मों पर ध्यान देना चाहिए। वर्तमान समय 'संगम युग' है जो कि सारे कल्प में एक ही बार आता है। अतः अब इस युग में अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का शुभ-चिन्तन करना चाहिये तथा दूसरों का भी शुभ-चिन्तक बनना चाहिये। □

वर्धा सेवा केन्द्र द्वारा सेंगपुलगाँव में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० शोभा बहिन।

इन्दौर-उषा गंज छावनी में नये राजयोग साधना केन्द्र का उद्घाटन ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी तथा भ्राता प्रहलाददास टेकडीवाल दीप प्रज्जवलित कर रहे हैं।

राजगंगापुर में 'युवा उत्थान आध्यात्मिक प्रदर्शनी' में ब्र० कु० ममता, भ्राता बनमाली रथ, तहसीलदार को चित्रों की व्याख्या करते हुए।

फतहगढ़ में आयोजित 'युवा-जागृति महोत्सव' में बोलते हुए भ्राता ब्रह्म दत्त अवस्थी, विश्व हिन्दू परिषद।

मोगा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन उद्योगपति भ्राता दर्शन लाल जी कर रहे हैं।

झारसुगडा सेवा केन्द्र की तरफ से युवा जाग्रति आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् ब्र० कु० ज्योति एस० डी० ओ० भ्राता रघुनाथसिंह को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए।

सिरसी में हुए स्नेह मिलन में (बाँए से) ब्र० कु० बलवंत जी, भ्राता नेवरेकर जी, श्री भट्ट वकील, भ्राता देशपाण्डे जी, भ्राता गौडा जी तथा ब्र० कु० गायत्री जी।

अब हमें क्या करना है ?

भक्त लोग भगवान् से प्रार्थना करते हुए प्रायः कहते हैं कि—"हे प्रभु ! आप हमें एक अंगुली का सहारा दे दो तो हम इस संसार सागर से या बीच-भँवर से पार हो जायेंगे।" परन्तु अब भगवान् मनुष्य मात्र से कहते हैं कि—"हे वत्स, अब आप मुझे अपनी एक अंगुली दे दो तो मैं उसे पकड़ कर आपको समस्याओं की मंझदार के बीच से निकाल कर पार कर दूँगा।"

भगवान् कहते हैं—"वत्सो, हरेक अंगुली के तीन पोटे (भाग) होते हैं। अंगुली का एक भाग इस बात का इशारा देता है कि अब आप मन, वचन, कर्म से पवित्र बनो। अंगुली का दूसरा भाग यह संकेत देता है कि आप मन, बुद्धि और कर्म से ट्रस्टी (Trustee) होकर रहो और अंगुली का तीसरा भाग यह बताता है कि आप अपना तन, मन और धन घर-गृहस्थ की आवश्यकताओं को पूरा करने में लगाकर, उनका शेष इस सृष्टि को सुधारने के कार्य में लगाओ। वत्सो, आप यह अंगुली मुझे दे दो तो मैं आपको सभी समस्याओं से पार, सम्पूर्ण सुख-शान्ति की दुनिया में ले चलूँगा। आप दूसरों को अंगुली का इशारा देकर राह दिखाते हो परन्तु अब स्वयं को इस प्रकार अंगुली दिखाकर समस्याओं से पार होने वाले मार्ग पर लगाओ !"

भगवान् कहते हैं—"यदि आप अपनी अंगुली नहीं देना चाहते बल्कि मेरी ही अंगुली पकड़ना चाहते हैं तो मुझ से बुद्धि का योग लगाओ क्योंकि बुद्धि-योग अथवा मेरी याद ही मेरी अंगुली है; मेरी कोई स्थूल अंगुली तो होती नहीं है ! वत्सो, पकड़ो मेरी योग रूपी अंगुली को तो मैं आपको अपने परमधाम में अथवा वैकुण्ठ में राज्य-सिंहासन पर ले चलूँ !"

"वत्सो, आप मुझ से पूछते हो कि—"हे प्रभु, अब हम इस परिस्थिति को कैसे पार करें ? हे प्रभो, हम इस समस्या के हल के लिए क्या करें ?" अतः मैंने अब आपको बता दिया है कि आपको क्या करना है। आप या तो अंगुली दे दो और या मेरी योग रूपी अंगुली पकड़ लो तो आप सदा के लिए सुखी हो जायेंगे।"

परमपिता परमात्मा शिव

क्या पति को 'परमेश्वर' कहा जा सकता है ?

ले० ब्रह्माकुमार बृजमोहन,

हमारे देश में विवाह के समय कन्या को जो शिक्षाएँ दी जाती हैं उनमें एक यह भी है कि "नारी के लिए पति ही उसका गुरु और ईश्वर है। अपने पति को ही परमेश्वर मानना नारी का धर्म है। नारी के लिए परमेश्वर की भक्ति यही है कि वह मन, वाणी और कर्म से जीवन-भर अपने पति-परमेश्वर की सेवा करे।" सौभाग्यवती नारी वही समझी जाती है जो पति-सेवा में, पति के चरणों में ही प्राण छोड़े। यदि दैवयोग से पति का देहान्त पहले हो जाय, तो नारी को दुर्भाग्यवती माना जाता है। कुछ समय पहले तक तो धर्म और शास्त्र के अनुकूल आचरण यही समझा जाता था कि युवा-विधवा को अपने पति के साथ ही जीते-जी चिता पर बैठकर 'सती' हो जाना चाहिए। अंग्रेजों द्वारा यह अनर्थ बन्द किये जाने तक कितनी अबलाओं का रोना-पीटना ढोल-बाजों के शोर में दबाकर उन्हें जिन्दा जलाया गया होगा ? उफ़ !

शास्त्रों में पतिव्रता और सती नारियों की कई कथा-कहानियाँ लिखी हुई हैं। विचार की बात है कि स्त्री की तरह ही भला पति को भी पत्निव्रता और धर्मपति बनकर रहने तथा स्त्री के देहान्त पर उसके साथ ही 'सती' हो जाने के लिए आदेश क्यों नहीं ? दूसरी विचारणीय बात यह है कि नारी का सम्मान कब से और क्यों घटा ?

ज्ञानसागर परमात्मा शिव से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा मिल रहे ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर हम बता सकते हैं कि ५००० वर्ष के सृष्टि-चक्र (कल्प)में आधा कल्प अर्थात् २५०० वर्ष के सतयुग और त्रेतायुग में जब यह सृष्टि सतोप्रधान, स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ थी तो यहाँ देवी और देवताओं का वास था जहाँ दोनों को बराबर का सम्मान प्राप्त था। उसका प्रमाण मन्दिरों में स्थापित मूर्तियों से भी मिलता है जिनमें देवी और देवता दोनों को साथ-साथ, एक-दूसरे के अंग-संग ही दिखाया जाता है। वहाँ महाराजा के साथ जो महारानी थी, वह भी राजसिंहासन पर विराजमान रहती थीं। इस सत्यता की पुष्टि रामराज्य के श्री राम और श्री सीता के चित्रों से भी होती है। वास्तव में उस काल में देवियों को देवताओं से अधिक सम्मान प्राप्त था। इसीलिए हमारी पूर्वजा देवियों के नाम देवताओं के नामों से पहले उच्चारण किए जाते हैं जैसे कि श्री राधे-श्रीकृष्ण, श्री लक्ष्मी- श्री नारायण, श्री सीता- श्रीराम इत्यादि।

परन्तु अब से कोई २५०० वर्ष पूर्व, द्वापर युग में जब देवता वाम-मार्गीय बने और उनमें माया (काम, क्रोधादि विकारों) की प्रवेशता हुई, उसी काल में वेद-शास्त्र आदि रचे गये और इस सृष्टि में पुरुष की प्रधानता हो गई। सभी शास्त्र लिखने वाले विद्वान्, आचार्य, पण्डित, पुरुष ही तो थे। शास्त्रों में तो पूज्य देवी श्री लक्ष्मी के लिए भी लिख दिया गया है कि वह श्री नारायण के चरण दबाया करती थीं। ऐसे अनेक उदाहरण देकर ही आजकल पति अपनी स्त्रियों का तिरस्कार और अपमान करते हैं। सभी मत-स्थापक भी पुरुष ही हुए हैं। अब से लगभग १५०० वर्ष पूर्व जब शंकराचार्य द्वारा संन्यास घराना स्थापित हुआ तो नारी का और भी अधिक तिरस्कार होने लगा। संन्यासी नारी को 'नागिन' और 'नरक का द्वार' मानते हैं और वह घर-बार छोड़कर अपनी स्त्री तथा बच्चों को जीते-जी विधवा और अनाथ बनाकर भाग जाते हैं। उनमें से बहुत संन्यासियों के विचार में नारी के लिए संन्यास करने का निषेध है। ऐसा शायद इसलिए है कि यदि वह जहाँ संन्यासी जाते हैं वहाँ चली जाय तो बेचारे संन्यासी कहाँ जाएँगे ?

वास्तव में परमपिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते सभी मनुष्यात्माएँ, चाहे वे स्त्री-तन में हों या पुरुष तन में, बराबर हैं। वैसे भी स्त्री को पुरुष की 'अर्धाङ्गनी' (Half-Partner) कहना ही यथार्थ है। इसके अतिरिक्त, मनुष्यात्मा तो स्त्री अथवा पुरुष दोनों चोलों में पुनर्जन्म लेती रहती है, तब भला किसी एक जन्म में उसके स्त्री का शरीर धारण करने मात्र से ही उसकी ग्लानि करना

कहाँ तक उचित है ? मोटे रूप से तो यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक आत्मा कभी स्त्री, कभी पुरुष बनती हुई लगभग आधे जन्म पुरुष और आधे जन्म स्त्री के लेती है। यही बात Law of Statistical Regularity[1] से भी सिद्ध हो सकती है। ब्रह्मा के दिन अर्थात् सृष्टि-चक्र के प्रथम आधे कल्प में (१—२५०० वर्ष तक), जब यह सृष्टि पावन है, तो देवी और देवता दोनों पूज्य, पावन और श्रेष्ठाचारी हैं, सच्चे अर्थ में 'धर्मपति' और 'धर्मपत्नी' हैं। ब्रह्मा की रात्री अथवा सृष्टि-चक्र के पिछले आधे कल्प में (२५०१ से ५००० वर्ष तक) अर्थात् द्वापर और कलियुग में, जब भारत पतित, पुजारी और भ्रष्टाचारी बन जाता है तो नर-नारी दोनों ही विकारी बन जाते हैं। दैवी-सम्प्रदाय में देवी-देवता दोनों ही पावन हैं और आसुरी सम्प्रदाय में नर-नारी दोनों ही पतित हैं। आसुरी स्वभाव वाले पुरुषों में विकार काम-क्रोधादि यदि स्त्री से अधिक नहीं तो कम भी नहीं होते। उदाहरण के लिए, अनेकों पति ऐसे हैं जो अपना धन-दौलत, शराब, जुआ आदि खेलकर बरबाद कर देते हैं और अपनी स्त्री को मार-पीट करते हैं। ऐसे महा-नीच मनुष्यों को भी अपनी पत्नी के गुरु-परमेश्वर कहना कहाँ का न्याय है ?

पति को ही परमेश्वर मानने की शिक्षा देने वाले वास्तव में कितनी ही मनुष्यात्माओं को परमात्मा से विमुख (विप्रीत) करने के पाप के भागी बनते हैं। परमात्मा एक है जबकि 'पति' अनेक देह-धारी मनुष्य हैं ? परमात्मा तो पतियों का भी पति है, अर्थात् सबका स्वामी या मालिक है। वह सबसे ऊँचा है। नारी-जाति का निरादर होने के कारण ही परमपिता परमात्मा शिव जब कलि-युग के अन्त में प्रजापिता ब्रह्मा के मुख-कमल से गीता-ज्ञान सुनाने के लिये अवतरित होते हैं तो वह ज्ञान का कलश ब्रह्माकुमारी सरस्वती तथा अन्य कन्याओं-माताओं को ही देते हैं। इसीलिए, परमात्मा को **'कन्हैय्या'** भी कहा जाता है। इन्हीं भारत-माताओं अथवा शिव-शक्तियों रूपी सच्ची चैतन्य ज्ञान-गंगाओं के द्वारा ही परमात्मा सच्चे गीता-ज्ञानामृत की गंगा बहाकर भारत को पतित से पावन करते हैं अर्थात् पुनः नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी बनाते हैं। इस प्रकार, परमात्मा शिव उन्हीं अबला नारियों को, जिन्हें संन्यासी "नरक का द्वार" कहते आये हैं, सच्चे सतयुगी स्वर्ग के द्वार खोलने के निमित्त बनाते हैं।

१. किसी देश के निवासियों की सब प्रकार की अवस्थाओं की क्रम-बद्ध गणना करने वाली विधा का एक प्रसिद्ध सिद्धान्त।

आओ खेल खेलें

ब्र० कु० प्रेमसागर, लक्ष्मी नगर देहली

सामने हम एक ४९ खानों की बनी सारणी का चित्र दे रहे हैं। जिसमें तीन प्रकार के खाने हैं। पहला सफेद, दूसरा लिखा हुआ, और तीसरा काला है। अब आपको सफद वाले खानों में सही उत्तर भरना है। जिससे अन्त में आपको सभी शब्दों को पढ़ने के पश्चात् कोई न कोई बापदादा द्वारा दिया गया धारणा युक्त सलोगन मिलेगा। ये सलोनग लगभग १२ शब्दों का होगा। जब आप सफेद वाले खाली खानों को भर लेंगे तो उसके पश्चात् अपने उत्तर का सही मिलान कीजिए, जो कि इसी अंक में कहीं पर दिया हुआ होगा। इस खेल को खेलने के लिए निर्धारित समय १० मिनट।

सहनशक्ति—सर्व विघ्नों से बचने का कवच

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

(एकान्तप्रिय नवयुवक मोहन बगीचे में सुन्दर हरे घास के गलीचे पर मग्नावस्था में बैठा हुआ है। मोहन का मित्र सोहन थोड़ी दूरी पर खड़ा है)

सोहन—(गंभीर स्वर)—भैया···भैया···

मोहन—(शान्त मुद्रा में)—कौन ? सोहन ! आप यहाँ कैसे आये, आपको कैसे पता चला कि मैं यहाँ बैठा हूँ।

सोहन—भैया, अभी मैं आपके घर गया था। मम्मी ने कहा कि शायद मोहन सामने बगीचे में बैठा हुआ होगा। आजकल वह एकान्त में बैठना ज्यादा पसन्द करता है। सच बताओ भैया, आप किस सोच में डूबे हुए थे···

मोहन—मैं यहाँ बैठकर राजयोगाभ्यास अर्थात् परमपिता परमात्मा शिव की याद में खोया हुआ था।

सोहन—(आश्चर्य से)—भैया, इस युवावस्था में योग-अभ्यास की क्या जरूरत है, किस चक्कर में फँसे हुए हो आप···

मोहन—(मुस्कारते हुए)—बताता हूँ सोहन, पहले ये बताओ कि आपका हालचाल कैसा है···

सोहन—(लम्बा श्वास लेकर)—भैया, इस कलि-युगी दुखभरे संसार में हाल कैसा होगा यह तो आप जानते ही हैं, हाल तो बेहाल ही है।

मोहन—क्यों, क्या बात है सोहन···ये आँखों में मोती कैसे···कोई बात नहीं, ये मोती ही तुम्हारे जीवन रूपी खेती में बहार लायेंगे। लेकिन, बताओ तो सही क्या हुआ···

सोहन—(हल्के लहजे से)—भैया, आपको तो पता है ही, जो एक आधार पिताजी का था, वो भी उन्हींके देहान्त से २ साल से समाप्त हो चुका। जिससे इन दो साल में मेरी बेहाल हालत बन गई। पिताजी के होते हुए जो भाभी मुझे अपने बच्चे की तरह लाड-प्यार से पालती थी, वो मेरे लिए जैसे कि महाकाल बन गई···

मोहन—ऐसा क्यों···

सोहन—(आँखों से आँसू पौंछते हुए)—भाभी ने मेरे नाक में दम कर दिया है···वह मुझे अपने घर में देखना भी पसन्द नहीं करती। नौकर से भी तो अच्छा व्यवहार किया जाता है, उसके कटु वचन तीर की तरह मेरे दिल को घायल कर देते हैं। और ऊपर से गधे की तरह घर के काम का बोझ मुझ पर लादती है और खाना भी कुत्ते की तरह मुझे खिलाती है···

मोहन—क्यों, आपका भैया उसे कुछ नहीं कहता है···

सोहन—क्या बताऊँ मोहन भैया, मैंने सोचा था कि मेरा भैया, पिताजी के जाने के बाद मेरी जीवन रूपी नैय्या का खिवैय्या बनकर पार लगायेगा। लेकिन भैया ने तो मेरा रवैय्या ही ठीक कर दिया···

मोहन—(दिलासा देते हुए)—कोई बात नहीं सोहन, दुख के दिन कभी तो सुख में बदल ही जाते हैं। जैसे बादल बहुत कोशिश करते हैं सूर्य को छिपाने की, लेकिन कुछ समय बाद वो बरसते हैं या बिखर ही जाते हैं। भगवान के घर में देर है, अन्धेर नहीं है···

सोहन—(दुखभरे स्वर में)—भैया, आखिर वो सुख के दिन कब आयेंगे···

मोहन—हिम्मत नहीं हारो सोहन, हिम्मत ही मनुष्य के जीवन का श्वाँस है। जो भी बातें सामने आतो हैं उन्हें सहन करना सीखो। संसार में जो भी महान आत्माएँ होकर गई हैं, उन्होंकी महा-नता आज तक भी जीवित है। उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन में आँधी-तूफान, विकट परि-स्थितियाँ तथा हजारों समस्याओं को हँस-हँसकर सहन किया और संसार में नई क्रान्ति लाई। शीत-लता के जल से ईर्ष्या-द्वेष की आग को बुझाते हुए अनेकों के हृदय शीतल बनाए। उन्होंका प्रेरणा-

दायक जीवन इस घोर अन्धकारमय संसार में चिराग के रूप में रोशनी प्रदान कर रहा है···

सोहन—बात आपकी बिल्कुल सत्य है भैया, लेकिन सहन करने की भी तो कोई हद होती है। वह घर मेरे लिए जैसे कि बंदीघर बन चुका है।

मोहन—घबराओ नहीं सोहन, सदा विजय सत्य की ही होती है। निर्भयता से इन परिस्थितियों से लड़ना सीखो। पूछो जरा शेर से कि—"तू जंगल का राजा कैसे बना"। शेर तो जंगल में दिन-रात आँधी-तूफानों से खेलता रहता है, काँटों को कुचलता रहता है फिर भी अपनी मौलाई मस्ती में जंगल में टहलता है। तब कहीं वह जंगल का राजा कहलाता है। उससे भी हमें कुछ सीखना चाहिए···

सोहन—(सोचते हुए)—सीखना तो चाहिए, लेकिन···

मोहन—(गंभीर मुद्रा से)—सोहन, सहन करने के पीछे बड़ा गहन राज छिपा हुआ है। जो आत्मा इस राज को समझकर इस अमूल्य गहने को पहनती है वह इस संसार में सूर्य की तरह चमकती है।

सोहन—ऐसा कौनसा गुह्य राज है···

मोहन—सहन करने वाला व्यक्ति ही सराहनीय बनता है। और जब हम इस शक्ति की महानता को जानते हैं तो उसे धारण करना अति सहज अनुभव होता है।

सोहन—लेकिन भैया, कहना और सहना इसमें बहुत अन्तर है···

मोहन—सोहन, आपकी बात सत्य है, लेकिन जो सहता है वह कुछ कहता नहीं है। धारण करने वाला कभी कारण नहीं बताता है। सहना यह वीरता की निशानी है और कहना अर्थात कारण बताना कायरता की निशानी है। वास्तव में यह सहनशक्ति ही जीवन को निखारती तथा सँवारती है।

सोहन—भैया, आपके शक्तिशाली बोल सुनने से मुझे हिम्मत ज़रूर मिलती है, लेकिन क्या मैं कमज़ोर आत्मा इसे अपना सकूंगा ?

मोहन—सोहन, किसी भी प्रकार का शक, शक्ति को धारण करने से वंचित रखता है। यह शक ही तो हमें माया का शिकार बनाता है।

सोहन—भैया, बात तो आपकी बेशक ठीक है। लेकिन भाभी जब गुस्से में आकर मुझ पर झपटती है तो मैं घबराता हूँ जिससे मेरे से और भी गलती हो जाती है।

मोहन—ऐसा ही होता है सोहन, क्योंकि जब हम घबराते हैं तो बुद्धि विचलित होती है जिससे व्यक्ति मन का सन्तुलन खो बठता है। इसलिए चाहे कुछ भी सहन करना पड़ या त्याग करना पड़े लेकिन बुद्धि को विचलित न होने दें। इससे हम लक्ष्य तक सहज पहुँच सकते हैं। इसलिए सदा एक बात बुद्धि में रखो कि—

जहाँ होगा सहनशक्ति का अभाव।
वहाँ होगा स्वभाव संस्कारों का टकराव॥

सोहन—भैया, अगर कोई गलती न होने पर भी डाँटता है तो मेरा कलेजा फटने लगता है।

मोहन—सोहन, वर्तमान समय चहुँ ओर माया अर्थात विकारों का ही बोलबाला है। हर व्यक्ति में माया की अति है। हर पल माया किसी न किसी मनुष्यात्मा में प्रवेश कर हमारी कसौटी लेती रहती है। जैसे कभी कोई भूतात्मा किसी के तन में प्रवेश होकर हमें तंग करती है। तो उस व्यक्ति पर रहम आता है। क्योंकि दोष भूतात्मा का होता है न कि उस व्यक्ति का। ऐसे ही विकारों रूपी महाभूतों में से कोई भी भूत किसी व्यक्ति में प्रवेश होकर हमें तंग करता है तो समझो माया आपकी उस व्यक्ति के माध्यम से परीक्षा ले रही है। चाहे कुछ भी हो उस परीक्षा में पास होकर रहना है। ऐसी भावना रखने से हर बात सहज अनुभव होती है।

सोहन—लेकिन भैया, उस समय सुनने की शक्ति तो चाहिए न···

मोहन—सोहन, सुनने की शक्ति का होना महानता को सिद्ध करता है। क्योंकि सुनाने की शक्ति तो आज सभी में है। सुनने की शक्ति किसी बहादुर के पास ही होती है जिससे वह सदा माया के प्रभाव से दूर रहता है।

सोहन—भैया, अगर कड़े तथा कटुवचन सुनते समय हम चुप रहकर जबाव नहीं देते तो वह और भी नवाब बनकर रोब डालने लगता है।

मोहन—सोहन, जहाँ तक मेरा अनुभव है; जब अपनी चाल-चलन यथार्थ होती है तो कोई भी हमें चलायमान नहीं कर सकता। किसी की मजाल नहीं जो हमें अपने जाल में फँसा दे।

सोहन—(उदास मुद्रा में)—भैया, कई बार अपनी चाल-चलन ठीक होने पर भी कोई हमें उल्टा बोल देता है।

मोहन—सोहन ये कभी नहीं भूलना कि हमारे सिर पर पिछले अनेक जन्मों के पापकर्मों का बोझ है। वह हमें किसी के अनुचित व्यवहार से तथा कर्म-भोग से भी चुक्ता करना पड़ता है। क्योंकि इस सृष्टि का नियम है—(Every action has opposite reaction) अगर कोई हमें दुख देता है इससे सिद्ध है कि हमने उसको पहले कभी दुख दिया है। इसलिए चाहे हमसे कोई कसा भी व्यवहार करे, हमारा कर्तव्य है सभी को शान्ति, स्नेह और शुभ-भावनाओं का दान देना।

अगर तुम्हारी कोई ग्लानि करे, तो समझो एक विकर्म विनाश हुआ। दूसरा अपशब्द कहे, तो समझो दूसरा विकर्म विनाश हुआ। निरादर करे, तो समझो तीसरा विकर्म विनाश हुआ। ऐसा दृष्टिकोण रखने से सहन करते समय भी हल्केपन का तथा अन्तर मन में खुशी की अनुभूति होगी।

सोहन—भैया, आपके साथ कॉलेज में कई विद्यार्थी अनुचित व्यवहार करते हैं फिर भी आप सदा शान्त रहकर सहन करते रहते, आपने यह सहनशक्ति कैसे अपनाई ?

मोहन—सोहन, लगभग मैं ६ मास से राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ। अनुभव यह कहता है कि योगी किसी भी व्यक्ति या वैभव अर्थात् माया के प्रभाव से निर्लिप्त रहकर एकरस स्थिति अनुभव करता है। क्योंकि जब हम योगाभ्यास में सर्व-शक्तिवान परमात्मा शिव से बुद्धियोग जोड़ते हैं तो शक्तियों को स्वयं में भरते हैं ? जिससे माया पर सहज ही जीत पाते हैं।

सोहन—इसका मतलब कॉलेज की पढ़ाई के साथ, यह योगाभ्यास—नितान्त आवश्यक है···

मोहन—इसमें कोई शक नहीं है सोहन। इसलिए कहते भी है Education is incomplete without Spirituatily.

सोहन—भैया, इस जीवन की लम्बी यात्रा में कई विघ्न आते रहते हैं, उस समय हम क्या करें···

मोहन—वास्तव में "सहनशक्ति—सर्व विघ्नों से बचने का कवच है" इस कवच को सदा पहनने से स्वत: ही हम विघ्न-विनाशक बन जाते हैं।

सोहन—भैया, जब हम विघ्न के चम्बे में फँस जाते हैं तो उस समय सहनशक्ति को धारण करना बड़ा मुश्किल लगता है।

मोहन—सोहन, विघ्नों को आने का दरवाज़ा है—अभिमान और अपमान। और इस दरवाज़ा को बंद करने का उपाय है आत्म-अभिमानी होकर रहना। योगी सदा आत्म अभिमानी होकर ही कर्म करता है तो वो विघ्न को भी लगन बढ़ाने का साधन अनुभव करता है। इसलिए सदा याद रखे—

जब समझते हैं काया, तो आ जाती है माया।
जब समझते हैं आत्मा, तो माया का होता है खात्मा॥

सोहन—लेकिन भैया, जब कभी विघ्नों का सामना करते हुए हार हो जाती है तो मन निराश तथा उदास हो जाता है···

मोहन—मोहन, जीवन में कभी हार होती भी है तो हार से नहीं डरो। क्योंकि वह हार ही हमें विजयी बनने का संदेश लाती है। अगर निश्चय में थोड़ा भी संशय नहीं होता तो विजय निश्चित होती ही है। योगी सदा ईश्वरीय नशे के झूले में झूलता रहता है तो दुनिया को भूला रहता है जिससे वह एकरस स्थिति में रहता है। इसलिए एक बात जरूर ध्यान में रखना—

जितना रहेंगे ईश्वरीय नशे में चूर,
उतनी माया भाग जाती है दूर।
अगर न होगा ईश्वरीय नशा,
तो माया से होगी कशमकशा॥

सोहन—भैया, इस ईश्वरीय नशे को कायम कैसे रखें ?

मोहन—स्थाई ईश्वरीय नशे में रहने के लिए विशेष मनसा, वाचा और कर्मणा में पवित्रता को अपनाना परमावश्यक है। पवित्रता के अभाव से ही स्वभाव चिड़चिड़ा तथा उतावला होता है। पवित्रता से आत्मा सदा खुशी में नाचती रहती है। कहावत भी है—"खुशी जैसी खुराक नहीं, गमी जैसा रोग नहीं"। तो इस अविनाशी खुराक से आत्मा शक्तिशाली बनती है जिससे सदा के लिए माया से मुक्ति मिल जाती है।

सोहन—भैया, आपकी बातें सुनकर मेरा भी मन रूपी मोर खुशी में नाच रहा है।

मोहन—सोहन, इस शक्ति को अपनाने से और भी कई लाभ हैं। जब अपने जीवन में इस महान शक्ति की धारणा होने लगती है तो अन्य शक्तियाँ जैसे सामना करने की शक्ति, सहयोग देने की शक्ति समाने की शक्ति स्वतः ही अनुभव होती है। इन शक्तियों को पाने के लिए विशेष पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं होती है। कुछ समय बाद इस सहनशक्ति का रूपान्तर सहनशीलता रूपी दिव्य गुण में होता है। यह गुण अनेक गुणों का आह्वान करता है। फलस्वरूप हर्षितमुखता, नम्रता, निर्भयता, सत्यता, गंभीरता जैसे गुणों की पूँजी स्वतः ही प्राप्त होती है। सहनशील व्यक्ति इसी कारण परिवर्तन शक्ति के आधार से सम्पूर्णता की मंजिल की ओर तेजीसे आगे बढ़ता है।

सोहन—सचमुच, कितनी महान उपलब्धियाँ इस एक शक्ति से होती है···

मोहन—सोहन, इतना ही नहीं, इस सहने के गहने को पहनने वाला दुनिया के सामने आयने का काम करता है। यह सहना, एक आयना (Mirror) बन जाता है और अनुचित व्यवहार करने वाला व्यक्ति अपनी रूहानी सूरत उसमें देखकर अपनी कमी (Error) महसूस करता है। इससे सिद्ध होता है सहनशील व्यक्ति अपने गुण की शक्ति से अन्य व्यक्तियों के अवगुणों को निकलाने के लिए सहयोग देने का महान कार्य करता है।

सोहन—भैया, मैंने तो प्रण कर लिया कि हर हालत में मुझे इस दिव्य शक्ति को धारण करना ही है, मुझे आप राजयोग के शिक्षा के स्थान का पता जरूर बताना।

मोहन—अवश्य, आपने अपने मन मन्दिर में आशा का दीपक जगाया इस बात की मुझे भी बहुत खुशी हो रही है। सोहन, सहनशील व्यक्ति को लोग बहुत ऊँची दृष्टि से देखते हैं ? क्योंकि—सहनशील व्यक्ति मननशील भी होता है। वह गंभीरता से हर बात की गहराई में जाकर ज्ञान रत्नों को पाकर सदा सम्पन्न रहता है। ऐसे व्यक्ति का संग हर कोई चाहता है।

सोहन—भैया, क्या ऐसे व्यक्ति लोक-पसन्द भी बन जाते ?

मोहन—इसमें कोई शक नहीं मोहन, क्योंकि जो जितना होगा सहनशील, वो उतना जीतेगा सबका दिल। ऐसे व्यक्तियों के पास सदा स्वयं सन्तुष्ट रह कर, हर आत्मा को सन्तुष्ट करने की कला होती है। ऐसी महान आत्माओं पर ही सभी महिमा के पुष्पों की वर्षा करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति ही दुनिया में गायन योग्य बनते हैं क्योंकि वो अपनो यादगार छोड़ जाते हैं। इसलिए कभी न भूलना कि—

जब पहनते हैं सहनशक्ति का गहना अमूल्य।
तब बन जाता है साधारण मानव भी देवता तुल्य॥

○

शिव भगवानुवाच

मीठे बच्चे—अपने स्वधर्म को पहचानो—वास्तव में आप आत्मा का स्वधर्म ही शान्ति है। आप आत्मा शान्त स्वरूप हो, आपका बाप शान्तिदाता है, आपका धर्म और कर्म ही शान्त है, सिर्फ अपने स्व-स्वरूप को पहचान लो तो सेकण्ड में सच्ची शान्ति हो सकती है।

आध्यात्मिक-ज्ञान—युवा की शान

ब्र० कु० कृष्णा, साउथ एक्सटेंशन, नई दिल्ली

आज हर वृद्धजन को अपने उन सुनहरे स्वार्णिम दिनों को याद करने पर उन्हें अपने आप में एक अनोखा उत्साह पैदा हो जाता है जबकि वह युवा थे क्योंकि जीवन रूपी पुष्प की सुगन्धि ही युवावस्था है। और युवावस्था का सच्चा शृंगार उसके आध्यात्मिक होने में है। किन्तु सुगन्धि कभी-कभी दुर्गन्ध का भी रूप ले लेती है जब ऐसा होता है तो सारी जन-जाति पतन के गर्त की ओर जाने लगती है।

युवावस्था माना ही योग्यताओं, योजनाओं और युक्तियों से सम्पन्न जीवन, जिसमें सदा सीखने सिखाने की भावनाओं से निहित होते हैं। युवावस्था रूपी सुन्दर भवन की नींव सच्चरित्रता ही है। किन्तु आज के युवा का जीवन रूपी सुन्दर महल रेत के ढेर पर डगमगा-लड़खड़ा रहा है। इसको सुदृढ़ बनाने के लिए अदम्य साहस, उमंग-उत्साह, सन्तुष्टता, सहयोग अथवा पक्का इरादा चाहिए। युवा वर्ग का किसी राष्ट्र की अवस्था से निकटतम सम्बन्ध होता है। राष्ट्र की सच्ची सम्पत्ति भी वहाँ का युवा वर्ग ही है। राष्ट्र का गौरव, अपूर्व विजय, सतत विकास और अमरत्व की ज्योति को सदा प्रदीप्त करने का कार्य भार इन्हीं देश के कर्णधारों पर आधारित है। युवा वर्ग पवन का वह वेग है जो जिस तरफ बहना शुरू करता है समस्त जन-समूह उसी दिशा की ओर अग्रसर होने लगता है।

यवा वर्ग को नव रक्त (New Blood) की संज्ञा दे सकते हैं। जिस प्रकार रक्त का हमारे सारे शरीर में संचार होता है तो शारीरिक अंग ठीक कार्य कर जाते हैं और जहाँ रक्त संचार ठीक नहीं हो पाता तो वह अंग कार्य क्षमता को खोता जाता है और शिथिल हो जाता है। ठीक इसी प्रकार आज युवा हर क्षेत्र अथवा समष्ठि में आगे हैं। क्रांति और शान्ति लाने वाला भी बन जाता है तो भ्रांति और अशान्ति फैलाने वाला भी। वर्तमान समय इस नव रक्त (New Blood) में दास-वृत्ति, आलस्य, नैतिक असमर्थता, सामाजिक फूट, व्यावहारिक अभ्रद्रता, विलासिता व वासनायुक्त विचारों जैसे आसुरी गुण रूपी विकार पैदा हो चुके हैं। इससे यह निश्चित है कि देश व राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक सम्पत्ति को शीघ्र ही ध्वस्त कर देंगे।

युवावस्था की मूल विशेषता यह है कि मनुष्य इस आयु में साहसिक कार्य करने में प्रवृत्ति रखता है और उसमें साहस के साथ-साथ दिनों-दिन उत्तरदायित्व और अनुभव जुड़ता जाता है। वह रचनात्मक कार्यों द्वारा संसार के सुख साधनों में अभिवृद्धि कर सकता है। जीवन की उलझती उलझाती समस्यों का सामना करने की शक्ति से सम्पन्न होता है। स्थापनाकारी युवा अपनी विशेषताओं और योग्यताओं को स्थापना के कार्यों और विश्व निर्माण की योजनाओं में लगाकर सदा प्रगति के पथ पर चलते रहेंगे। नम्रता, निर्माणता, और निर्भयता के आधार पर बिगड़ी को बनाने अथवा सुख देने और दुःख मिटाने की विश्व सेवा में सदा सहयोगी रहेंगे।

युवा में आध्यात्मिकता

युवा का जीवन आध्यात्मिक ज्ञान की शक्ति के आधार पर सत्यम शिवम् सुन्दरम् हो जाता है। जहाँ तक आज के युवा वर्ग की बात है वह भौतिकवादी बनता जा रहा है। जिसके कारण उसका जीवन असत्य, कुरूप और अकल्याणकारी बन गया है। जहाँ सादा जीवन ऊँच विचार होना चाहिए वहाँ आज फैशनेबल जीवन नीच विचार बन गए हैं। अश्लील फिल्मों और गन्दे साहित्य का पुजारी बन गया है। ऐसे में जबकि चारों ओर अज्ञान अँधेरा, दुःख और अशाँति के बादल मँडरा रहे हैं

(शेष पृष्ठ ७ पर)

"अब युग बदलेगा"

ब्र० कु० अरुणा, शिमला

परिवर्तन प्रवृति का नियम है। इस मनुष्य सृष्टी में कोई भी वस्तु सदा एक रस नहीं रही है। यहाँ तक कि सूर्य तथा चाँद की अवस्थाओं में भी परिवर्तन होता रहता है। समय भी परिवर्तनशील है। युग भी बदलते रहते हैं। युगों के परिवर्तन का क्रम इस प्रकार है—सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। अब कलियुग के समाप्त होने पर कौन-सा युग होगा ? उत्तर है सतयुग। तो फिर वर्तमान समय कौन-सा है ? जरूर वर्तमान समय युग-सधि का ही समय है। युग-संधि अर्थात् संगम। वर्तमान समय कलियुग के अन्त तथा सतयुग के आदि (शुरूआत) के बीच का कल्याणकारी समय पुरुषोत्तम संगम युग है। वर्तमान समय कलियुगी विकारों से भरपूर अज्ञान रात्री से निर्विकारी सतयुगी प्रभात अर्थात् अमृत बेला है। वर्तमान समय आत्मा का अपने परम-पिता परमात्मा से मिलन (संगम) का समय है। वर्तमान समय कनिष्ठ तथा विकारी मानव से उत्तम से उत्तम पुरुष अर्थात् पुरुषोत्तम बनने का पुरुषोत्तम संगम युग है। वर्तमान समय स्वयं निराकार परमात्मा के अवतरण होकर प्रजापिता ब्रह्मा मुख द्वारा गीता ज्ञान सुनाने का समय है। संगम युग सदा रहने का नहीं है। अब तो कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है। अब तो चाहे कोई माने या न माने, सुने या न सुने लेकिन युग जरूर बदलेगा। सदा अन्धेरी रात्री कभी भी नहीं रही है। अन्धेरी रात के बाद शुभ प्रभात का ही आगमन होता है। अब कलियुगी अज्ञान रूपी अन्धेरी रात के बाद सतयुगी शुभ प्रभात आ करके ही रहेगी। परिवर्तन की घड़ियाँ सदा कठिन तथा जटिल होती हैं। काफी समय से एक ही स्थान पर पड़ा हुआ एक पत्थर जो कि काफी मजबूती से जमा होता है जब उसे उसके स्थान से हटाया जाता है तो उसके साथ बगल में पड़े हुए छोटे-छोटे पत्थर, पेड़, पौधे तथा कीड़े-मकोड़ों को भी तकलीफ उठानी पड़ती है। इसी प्रकार २५०० वर्षों से चला आ रहा रावणराज्य जबकि अब समाप्त होना है तो इससे भी पुराने स्वभाव, संस्कार पुरानी आदतों तथा भ्रष्टाचार को छोड़ने आदि में भी थोड़ी बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है। क्योंकि उस थोड़ी तकलीफ के बाद जो लाभ होना होता है उसे देखकर थोड़ी तकलीफ सहन कर ली जाती है। वर्तमान संगम युग की इस विश्व परिवर्तन की घड़ी में असुरता, भ्रष्टाचार, जीवन मरण की भयंकर लड़ाई चल रही है। सतयुग में उन्हीं कल्प पहले वाले देवी देवताओं को पुनः सत्तारूढ़ होने में असुरता अर्थात् दानवता को पदच्युत करने में बहुत कुछ सहन करना पड़ रहा है।

सूर्योदय होने से पहले ही पूर्व दिशा में लाली छा जाती है। पक्षी चहचहाना शुरू कर देते हैं। औरतें चक्की पीसना, दही रिड़कना शुरू कर देती हैं। इति से पूर्व अति, सुख से पूर्व दुख अपनी चरम सीमा पर होता है। गर्भस्थ बालक को भी पेट से बाहर निकलने से पूर्व माता को प्रसव पीड़ा सहन करनी पड़ती है। नवजात शिशु का आगमन प्रसव के समय सहन किये गये कष्ट को सुख में परिवर्तन कर देता है। नई फसल बोने से पूर्व पुरानी फसल को साफ करना ही पड़ता है। कन्या की जब शादी होती है तो उसे ससुराल जाना होता है तो एक तरफ माता-पिता का विछोह तथा दूसरी तरफ ससुराल घर की रानी बनने की मधर कल्पनायें धैर्य बँधाती हैं। ठीक इसी प्रकार सतयुग से पूर्व कलियुग का भी परिवर्तन होना ही है। वर्तमान समय में जो कुछ भी असुखद घटित हो रहा है वह सभी सतयुग के आने की सुखद सम्भावनायें हैं। वर्तमान समय में नये विश्व की कलम

लगाने का कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा द्वारा हो रहा है। किसी भी स्थान को सुशोभित करने से पूर्व उस स्थान पर पड़े हुए कूड़े करकट को उठाना ही पड़ता है। विज्ञान की कल्पनातीत उन्नति भी भविष्य में नवयुग (सतयुग) के परम सुख की प्राप्ति का ही संकेत है। वर्तमान समय में जो भी असुखद घटनायें घट रही हैं वह सब नवयुग की पुनः स्थापना की पृष्ठभूमि तैयार कर रही हैं। यह वही उचित अवसर है जब असुरता पर देवत्व, तमोप्रधानता पर सतोप्रधानता, भ्रष्ट संस्कारों पर श्रेष्ठ संस्कारों की कलम लगी थी और अब फिर लगाई जा रही है। वृक्षारोपण का कार्य वर्षा काल में ही होता है तथा फल तथा फलदार पौधों की कलमें भी वसंत ऋतु में ही लगाई जाती हैं। वर्तमान समय पुरुषोत्तम संगम युग भविष्य प्रालब्ध के लिये उत्तम समय है। अब तन, मन, धन से उत्तम भविष्य प्रालब्ध का बीज बोया जा सकता है, मगर अभी नहीं तो कभी नहीं। अगर बीज बोने में थोड़ी भी देर हो गई या घटिया किस्म का बीज वो दिया गया तो जैसा बीज वैसा फल के अनुसार प्रालब्ध भी घटिया होगी। अभी सम्पन्न बनने का युग है। अभी संगम के स्टेशन से समय रूपी रेल छूटने वाली है। यदि थोड़ा भी लेट हो गये तो रेल को पकड़ न सकोगे। इस लिये समय पर ही खुद जागो तथा दूसरों को भी जगाओ। स्वयं जगने तथा दूसरों को जगाने का यही शुभ अवसर है। परन्तु अब भी अगर कोई कहे कि कलियुग की आयु लाखों वर्ष पड़ी है तो वह कुम्भकरण वाली नींद सो रहा है। तब तो विनाश के ढोल नगाड़े ही उसे जगा सकेंगे लेकिन उस समय बहुत देर हो गई होगी तब फिर पछताने से कोई लाभ न होगा।

समय की अन्तिम पुकार

स्वयं विश्व का परिवर्तक विश्व परिवर्तन की इस योजना को क्रिया रूप दे रहा है। इस निश्चत भावी (नाटक) में अब कोई भी रोक टोक अथवा रुकावट अब टिक न सकेगी। पतझड़ के बाद वसंत को कौन रोक सकता है। कलियुग के बाद सतयुग को कौन रोक सकता है। बस यूँ समझ लो अब रावण पर राम की विजय, कंस पर कृष्ण की विजय, असुरता पर देवत्व की विजय, तमोप्रधानता पर सतोप्रधानता की विजय की यह पूर्व घड़ियाँ हैं और विजय हुई ही पड़ी है। जिस प्रकार प्रभात होने पर हम शौचादि से निवृत होकर हम स्नानादि करके अपनी दिनचर्या शुरू करते हैं, ठीक उसी प्रकार वर्तमान समय बुराइयों रूपी मल त्यागने तथा ज्ञान-अमृत से आत्म-स्नान करने का समय है। वर्तमान समय देह तथा देह के सम्बन्ध मान, शान, धन-जाति तथा कुल के साथ चिपकने का समय नहीं है। अब पुरुषोत्तम संगम युग की अन्तिम पुकार है कि देह तथा देह के सम्बन्धों का त्याग करके स्वयं को पहचाना जाये और सर्वशक्तिवान एक परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाकर अपना जन्म सिद्ध अधिकार मुक्ति तथा जीवन-मुक्ति प्राप्त किया जाये। अगर अभी नहीं तो फिर कभी नहीं। □

दहेज प्रथा (पृष्ठ २८ का शेष)

आगे प्रतिज्ञा करती हूँ कि आज विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या बढ़ रही है हम प्रैक्टिल में जीवन पवित्र बनाकर अनेक युवक युवतियों को इस समाज के कड़े बन्धनों से मुक्त करेंगे। इन दहेज लेने वालों के कड़े संस्कारों को परिवर्तन करेंगे, देश को उन्नत और खुशहाल बनायेंगे। इस भारत भू पर फिर से रामराज्य स्थापन करके युवाओं में नई प्रेरणा लायेंगे।

गाँव का मुखिया—शाबाश, आप जैसे युवक युवतियाँ अपने जीवन में त्याग तपस्या के द्वारा स्वयं के जीवन को बनायेंगे, एक बदलने से अनेक बदलेंगे, इनके जीवन से अनेक प्रेरणा लेकर अपने जीवन को दिव्य बनायेंगे। अब वो दिन दूर नहीं जब भारत भू पर अवश्य ही नई दुनिया आयेगी। मैं आशीर्वाद देता हूँ आप अपने कार्य में सदा खुश रहो, आगे बढ़ते रहो, औरों को प्रेरणा देते रहो। ○

दहेज प्रथा

ब्र० कु० मीनाक्षी, जयपुर

पात्र—पण्डित जी, विपिन (लड़का), मुन्नीलाल (लड़के के पिता), सरिता (लड़की) मोहनलाल (लड़की के पिता), मुखिया, नवनीत (ब्रह्माकुमार)।

(मण्डप सजा हुआ है, पण्डित जी हवन कर रहे हैं।)

पण्डित जी—(मंत्रोच्चार करते हुए)—अजी जल्दी कीजिए वर-वधु के लग्न में देर हो रही है। जल्दी कीजिए, वर-वधु को जल्दी से ले आओ।

मुन्नीलाल (क्रोध से)—बन्द करो, यह विवाह नहीं हो सकता जब तक दहेज में डेढ़ लाख रुपया नहीं देंगे, तब तक यह शादी नहीं हो सकती।

एक व्यक्ति बीच में—भाई साहब, छोड़ो जी, शुभ लग्न में विघ्न नहीं डालो, यह शुभ कार्य हो जाने दो, फिर देख लेना।

मुन्नीलाल—हरगिज नहीं, हमने लड़के को पढ़ाया है, लिखाया है, कम से कम इसका खर्चा तो मिलना चाहिए।

कुछ व्यक्ति—अवश्य मिलना चाहिए, आखिर शादी है। लड़की को ऐसे थोड़े ही ले जायेंगे।

मोहनलाल—अपनी पगड़ी उतार कर मुन्नीलाल के पाँव में रखता है। आप मेरे माई बाप हो, मेरी लाज रखो। इस समय मेरे पास पैसा नहीं है। मेरी दाढ़ी की लाज रखो। मैं सारी उम्र तुम्हारा एहसानमन्द रहूँगा।

मुन्नीलाल (पगड़ी को लात मारते हुए)—अगर पैसा नहीं था तो लड़की की शादी क्यों करने चले थे। हमारी नाक कटवा दी। चलो-चलो हम लड़की नहीं ले जायेंगे। उठो बेटा चलो चलें।

मोहनलाल (गिड़गिड़ाते हुए)—मेरी लाज रखो, मेरे ऊपर रहम करो।

सरिता—पिताजी, मैं इन भूखे भेड़ियों के साथ नहीं जाऊँगी, मैं इन दहेज लेने वालों का बहिष्कार करूँगी। मैं इनके साथ हरगिज नहीं जाऊँगी।

विपिन—पिताजी, आपने इस भूखे घर में बात पक्की क्यों की। हमारी दहेज की माँग पूरी नहीं करेंगे तो हम जा रहे हैं।

(भीड़ में से एक युवक निकलता हुआ)

नवनीत—सरिता, तुम घबराओ नहीं, तुम मेरे साथ वायदा करो कि हम पवित्र जीवन व्यतीत करेंगे और दहेज प्रथा को बन्द करने के लिए हम कन्धे से कन्धा मिलाकर दहेज प्रथा को बन्द कराएंगे, परन्तु तुम पहले वचन दो।

सरिता—सचमुच तुमने मेरे बाप की लाज रख दी। तुम जो कुछ कहोगे मैं समाज के कड़े बन्धनों को तोड़कर तुम्हारा साथ दूँगी। तुम्हारी हमारी हर बात में सहमति होगी।

नवनीत—(मोहनलाल से) पिताजी—मैं यह शादी करने के लिए तैयार हूँ। मैं दहेज नहीं लूँगा, ये हम युवकों की लाज है। हम इस बन्धन को तोड़कर रहेंगे।

मोहनलाल—सच बेटे! (आँखों में खुशी के आँसू) बेटा, तुम इस समय देवता के रूप में प्रकट हुए हो। मैं तुम्हारा ऐहसान जिन्दगी भर नहीं भुला सकूँगा।

पण्डितजी—शादी का शुभ मुहूर्त होता जा रहा है, जल्दी करो।

नवनीत—नहीं, सत्य ईश्वर परमात्मा ने जो १९३७ से ईश्वरीय यज्ञ की स्थापना की है और योग की अग्नि प्रज्ज्वलित की है, मैं आज उस ज्ञान और योग की अग्नि के सामने यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि हम ज्ञान और योग बल के द्वारा अपना जीवन कमल पुष्पसम पवित्र बना, घर गृहस्थ में रहते हुए विश्व के युवक और युवतियों को इस दहेज के जाल से मुक्त करेंगे। और जीवन को दिव्य बनायेंगे, और मैं आज ये बता देना चाहता हूँ कि ये इतनी ऊँची शिक्षा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में दी जाती है। मैं उसका नियमित रूप से विद्यार्थी हूँ।

सरिता—अहा! मैं कितनी सौभाग्यशाली हूँ। मैं आप सबके सामने तथा शिव परमात्मा पिता के

(शेष पृष्ठ २७ पर)

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

काठमाण्डो—युवा वर्ष के उपलक्ष में एक युवा प्रतिज्ञा समारोह का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि अस्तियार दुरुपयोग निवारण आयोग के अध्यक्ष भ्राता बासुदेव शर्मा जी पधारे थे। प्रातः कालीन उक्त समारोह में थर्ड युनिवर्सल पीस कान्फ्रेंस और युनिटी इन डाइवर-सिटी फिल्म दिखलायी गयी। बाद में प्रवचन का भव्य कार्यक्रम रखा गया था। मुख्य अतिथि भ्राता शर्मा जी ने उक्त सभा में २५ युवाओं को 'युवा प्रतिज्ञा' करायी कि बुराइयों से कैसे छूट।

श्रीगंगानगर—सेवा केन्द्र की ओर से गंगानगर के पास राजकीय विद्यालय में विश्व-नव-निर्माण प्रदशनी का आयोजन किया गया जिसे अनेक आत्माओं ने देखकर लाभ प्राप्त किया। इसके अलावा डूंगरपुर, छाँनी बड़ी में भी आध्यात्मिक-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

नासिक—सेवा केन्द्र द्वारा "आध्यात्मिक-जागृति पदयात्रा" आयोजित की गई। सर्वप्रथम यह यात्रा आध्यात्मिक-सन्देश देते-देते जल-शुद्धिकरण केन्द्र जो नासिक शहर से दूरी पर अलग और गोदावरी नदी के किनारे स्थित है वहाँ पहुँची। यह आध्यात्मिक जागृति, रूहानी यात्रा श्री सोमेश्वर शिव भगवान के विशाल प्रांगण में पहुँची। वहाँ पर अनेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

कलकत्ता—युवा वर्ष के उपलक्ष में तमलूक में 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी' का आयोजन हमिल्टन हाई स्कूल में किया गया। प्रदर्शनी शुरू करने के पहले १० हजार पर्चे आस-पास के गांवों में बाँटे गये। प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता भुवनेश्वर घर एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रट, भ्राता प्रवास बोस, तमलूक कालेज के प्रधानाध्यापक, और भ्राता के० सी० कर्मकार, हेमिल्टन हाई स्कूल के हेड मास्टर के द्वारा प्रदीप जलाकर किया गया। इसके अलावा महेशादव, नन्दकुमार, श्री कृष्णपुर, डिमारी, राधावल्लभ-पुर, काकाटिया आदि गाँवों में ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

रतलाम—सेवा केन्द्र ने अपने वार्षिक उत्सव के उपलक्ष में नगर के मध्य में मणक चौक स्थित स्कूल में विश्व-नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदशनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता शान्ति लाल जी अग्रवाल नगर के उद्योगपति एवं विधायक ग्रामीण, रतलाम ने द्वीप प्रज्वलित करके किया। प्रदर्शनी में अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति आये। इससे उन लोगों ने काफी लाभ उठाया।

दुर्ग—सेवा केन्द्र द्वारा प्राथमिक शाला कसारी-डीह में 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन दुर्ग नगर-निगम के महापौर भ्राता गोविन्द धींगड़ा जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रदर्शनी का समाचार दनिक अमृत सन्देश एवं नवभारत ने प्रथम पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित किया।

कोल्हापुर—कोल्हापुर के नजदीक इचलंकर जी शहर में विश्व-नव-निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई। शान्ति यात्रा तथा सार्वजनिक कार्यक्रम भी रखा गया था जिसमें उप-नगराध्यक्ष श्री पुजारी जी तथा कौन्सिलर मिश्री लाल जाजु पधारे थे। इसके अन्तर्गत राजयोग शिविर का भी प्रबन्ध किया गया। इससे अनेक आत्माओं ने लाभ लिया।

मचिली पटनम—उप-सेवाकेन्द्र का वार्षिक उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर आध्या-त्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भ्राता पी० वेंकटारमन (जेल सुपरिन्टेन्डन्ट) ने अपने कर-कमलों से किया। इस अवसर पर शान्ति यात्रा व चैतन्य देवियों की झांकी भी दर्शायी गयी थी। स्थानीय समाचारपत्रों में समाचार प्रकाशित हुआ। रेडियों द्वारा भी प्रदर्शनी की सूचना प्रसारित की गयी। इस प्रदर्शनी को शहर के हर वर्ग के लोगों ने देखकर लाभ उठाया।

उत्तरकाशी—हिमालय की पर्वत मालाओं की घाटी में स्थित उत्तरकाशी नगरी में गंगा दशहरे के अवसर पर गंगा स्नानार्थ भक्तों को आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा ज्ञान-स्नान कराया गया। अनेक पहाड़ों में स्थित ग्रामों से पधारने वाले लोगों ने लाभ प्राप्त किया तथा प्रदर्शनी लगाने के लिए निमन्त्रण दिया।

शिमला—सेवा केन्द्र की ओर से रैडक्रास मेले में चरित्र-

निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें विशेष अतिथि हिमाचल के चीफ़ सेक्रेटी की पत्नि बहन राज माठू व अनेक विशेष आत्मायें शामिल हुईं। उनको आध्यात्मिक प्रदर्शनी समझाई गयी। आप लोगों ने संग्रहालय में भी पधारने का निमन्त्रण स्वीकार किया। इस तरह इस प्रदर्शनी द्वारा अनेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

पुरी—सेवा केन्द्र की ओर से पारिकुद गड़ में एक प्रोग्राम का आयोजन किया गया। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता एम० एम० पंडा, चीफ़ डयूटी सेक्रेट्री एजुकेशन, उड़ीसा ने किया। ब्र० कु० निरुपमा बहन ने राज्य के भिन्न केन्द्रीय विद्यालय से आये हुए अध्यापकों के सामने चरित्र-निर्माण के ऊपर प्रकाश डाला और युवा वर्ग के ऊपर आधारित प्रोजैक्टर स्लाइडस भी दिखायी गयी।

सूरत—सेवा केन्द्र की ओर से डाक्टरों के लिए 'मेडिटेशन एंड मेडीसीन' नाम से एक कार्यक्रम रखा गया। यह स्नेह मिलन का कार्यक्रम सूरत मेडिकल एसोसियेशन के सहयोग से किया गया। शहर में बहुत ही तंग एवम् तनावग्रस्त परिस्थिति होते हुए भी बहुत अच्छी संख्या में डाक्टस इस कार्यक्रम में पधारे। जिसमें एलोपैथी, होमियोपैथी, आयुर्वेद और यूनानी सभी शाखाओं के डाकटर्स सम्मिलित थे। वक्ता के रूप में बम्बई से डा० गिरीश भाई और मैसूर से डा० कन्दा स्वामी थे। बहुत ही सफल प्रोग्राम रहा। सभी डा० सन्तुष्ट होकर गये और ऐसे प्रोग्राम आगे रखने का भी निश्चय किया।

एलिसब्रिज—अहमदाबाद—अहमदाबाद की अशान्त परिस्थितियों के सन्दर्भ में आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु ब्रिगेडियर करोच, व कैप्टन शेखावत से मुलाकात हुई। शान्ति की किताब तथा अन्य साहित्य भी भेंट किया गया। तत्पश्चात् उनकी राय अनुसार 'ईश्वरीय संदेश—खुदाई पैगाम' नाम से १०,००० पेम्पलेट बांटे गये। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि का 'शान्ति सन्देश' आकाशवाणी के अहमदाबाद, बड़ौदा, राजकोट, भुज सभी स्टेशनों से सात मिनिट के लिए प्रसारित हुआ तथा न्यूज में दिया और समाचार समीक्षा में दिया गया। इसके अलावा अनेक उच्च अधिकारी सेवा केन्द्र पर पधारे और ईश्वरीय सन्देश को सुना।

घाटकोपर-बम्बई—समाचार मिला है कि अंबरनाथ सेवा केन्द्र का उद्घाटन दादी निर्मल शान्ता जी के हस्त कमल द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके साथ डोंबिवली घाटकोपर तक दो दिन की पदयात्रा का आयोजन किया गया। इस पद यात्रा में लगभग १०० भाई-बहनों ने भाग लिया। बड़े उत्साह व उमंग के साथ अनेक स्थानों पर प्रोग्राम करते हुए यह पद यात्रा सम्पन्न हुई। पदयात्रा समाप्त होने के पश्चात् विज्ञान विभाग के निदशक भ्राता बी० के० गिरि और अनेक अन्य साथी इन्टरव्यू और शूटिंग करने आये थे। उनके अनेक प्रश्नों का उत्तर बहन-भाइयों ने दिये। बाद में मुंगावली जेल में डाकुओं की सेवा कैसे हुई इसकी फिल्म उन लोगों को दिखाई गयी वे लोग काफ़ी प्रभावित होकर गये।

बड़ौदा—समाचार मिला है कि बड़ौदा के पास बाघोडिया गाँव में घनिष्ठ ईश्वरीय प्रोग्राम रखा गया। विश्व दर्शन प्रदर्शनी के साथ रात्री को नवदेवियों को चैतन्य झाँकी रखी गई जिसका उद्घाटन भगिनी ब्रजलता बहन बहु जी ने किया। अतिथी विशेष अनुबहन ठक्कर जोकि गोरज गाँव के मुनि-सेवाश्रम की संचालिका हैं ने सबको इससे लाभ लेने की प्रेरणा दी।

ब्रह्मपुर—सेवा केन्द्र की ओर से 'ठाकुरानी यात्रा मेला में चतुर्दिवसीय विश्व नव-निर्माण आध्यामिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अलावा युवा वर्ष उपलक्ष में गाँव-गाँव की सेवा व युवकों की सेवा पर विशेष ध्यान दिया गया और वहाँ जाकर बुराइयाँ छुड़वाने का प्रयत्न किया गया है।

अजमेर—सेवाकेन्द्र की ओर से बार-एसोसियेशन में "राजयोग से आत्मिक शान्ति" विषय पर प्रवचन रखा गया तथा न्यायविदों व वकीलों को सेवा केन्द्र पर योग-शिविर हेतु निमन्त्रण दिया गया। जिसके फलस्वरूप एक न्यायाधीशों व एक वकीलों के ग्रुप ने योग शिविर से लाभ उठाया तथा बार एसोसियेशन के हाल में राजयोग की प्रदर्शनी करने का निमन्त्रण दिया।

भादरा—सेवा केन्द्र की ओर से राजयोग सम्मेलन का आयोजन नगर की प्रसिद्ध धर्मशाला के प्रांगण में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता दादी रतन मोहिनी जी द्वारा की

गई। सम्मेलन के मुख्य अतिथि नगर के मजिस्ट्रेट थे। सम्मेलन से अनेक प्रतिष्ठित आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

सिद्धपुर—सेवा केन्द्र की ओर से ब्राह्मण-वाडा गीता पाठशाला द्वारा युवा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसको अनेक शिक्षकों व गांव के लोगों ने देखा व लाभ उठाया। सिद्धपुर में लक्ष्मी मार्किट में शहर के मुख्य लोगों के लिए एक राजयोग शिविर का आयोजन किया गया।

मणिनगर अहमदाबाद—समाचार मिला है कि बिज्जापुर गीता पाठशाला के वार्षिकोत्सव निमित वहाँ के स्थानीय ब्राह्मण वाड़ी में एक आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें गांव के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने पधारकर अपने सुन्दर विचार प्रदर्शित किए। बलाक के भाई-बहनों ने अपने सम्बन्ध-सम्पर्क वाले व्यक्तियों की गुजराती में छपी हुई "शिव सन्देश" पुस्तिकायें भेंट करके ईश्वरीय सन्देश दिया।

थाना—शहर के प्रसिद्ध विद्यासागर हाईस्कूल में विश्व शान्ति भव्य प्रदर्शनी के साथ 'युवा और विश्व शान्ति' इस विषय पर स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया। 'आज का युवक कल का देवता' इस झाँकी के साथ एक बहुत बड़ी शोभा यात्रा निकाली गई जिसके द्वारा कई हजार आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

फतेहगढ़—समाचार मिला है कि ब्रह्माकुमारी ई० वि० विद्यालय की ओर से विद्यालय के प्रांगण में एक "युवा जागृति महोत्सव" का आयोजन फर्रुखाबाद जनपद के "अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश" श्री शिवाबाबू मिश्रा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव में एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें कुछ युवकों और युवतियों ने भाग लिया। इस महोत्सव द्वारा अनेक प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित किया गया।

शाहदरा दिल्ली—बड़ौत के भाई-बहनों के विशेष अनुग्रह करने पर बड़ौत में 'ठाकुर द्वारा धर्मशाला में तीन दिन की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी के दौरान कई स्थानों पर सत्संग का कार्यक्रम भी रखा गया। इसके अतिरिक्त पंचवटी धर्मशाला में व तहसील बागपत में वैश्य अग्रवाल धर्मशाला में भी प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया।

जूनागढ़—सेवा केन्द्र की ओर से पुलिस ट्रेनिंग कालेज में प्रोजेक्टर द्वारा अनेक आत्माओं को लाभ दिया गया तथा राजयोग शिविर भी कराया गया। इसके अलावा अनेक मृत्यु के अवसर पर शान्ति की अनुभूति कराने हेतु प्रवचन रखे गये जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

सतना—सेवा केन्द्र द्वारा आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन तहसील ऊँचेहरा में किया गया। प्रदर्शनी के पश्चात स्थानीय व्यक्तियों के आग्रह पर वहाँ स्थायी रूप से सेवा केन्द्र भी चल रहा है। आँगनवाणी कार्यक्रम की परियोजना अधिकारी शान्ति बहन जी भी सम्पर्क में आई। आपने सभी गाँवों में आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजन करने हेतु निमंत्रण भी दिया है।

अम्बाला छावनी—समाचार मिला है कि ब्रिगेडियर हर मन्दरसिंह जी के निवास-स्थान पर स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। जिसमें शहर के कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया। पधारे हुए व्यक्तियों के बीच राजयोग तथा ज्ञान के बिन्दुओं पर आदान-प्रदान हुआ।

बटाला—अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के अन्तर्गत युवा उत्थान प्रदर्शनी तथा दो अन्य संस्थाओं लायन्स क्लब, भारत विकास परिषद्र की मीटिंग में प्रवचन का कार्यक्रम चला। पालमपुर में भी तीर्थ स्थान बैजनाथ पपरोला में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग विडियो कैसट द्वारा जन-जन को सन्देश दिया गया।

ग्वालियर—प्रसिद्ध औद्योगिक क्षेत्र बामौर सीटी में विश्व-नव निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर पालिका अध्यक्ष भ्राता करतार सिंह ने किया। आपने अपने साथियों सहित योग शिविर भी किया।

ढेंकानल—फुलपड़ा (हिन्दोल) ग्राम वासियों के निमन्त्रण पर तीन दिन के लिए 'विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

बस्सी—युवा वर्ष के उपलक्ष में ग्रामीण क्षेत्र के युवकों के लिए एक युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के समाचार स्थानीय समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित किए गये। बड़ी संख्या में युवकों ने सम्मे-

लन से लाभ प्राप्त किया।

बिलासपुर—गीता पाठशाला की ओर से गाँव-गाँव में ईश्वरीय सेवा का अभियान आरम्भ हुआ है और मुख्य सड़क से १५-२० कि० मी० दूर पहाड़ी क्षेत्र में प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के ग्राम पंचायत प्रधान द्वारा कराया गया। इस प्रदर्शनी को देखकर अनेक ग्राम वासियों ने शिव बाबा का सन्देश प्राप्त किया।

दमोह—इंडियन मेडिकल एसोशियेशन के तत्वाधान में योग और स्वास्थ्य विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसमें सत्र न्यायाधीश भ्राता वी० जे० वराड पाँडे ने राजयोग पर चिकित्सकों के सम्मुख मुख्य अतिथी के रूप में अपने विचार प्रगट किए। इसके अलावा स्थानीय जेल में भी बहनों का प्रवचन कैदियों के बीच में हुआ।

मैसूर—मैसर नगर के चामुंडी पहाड़ पर देवी चामुंडश्वरी का मन्दिर है जहां पर हज़ारों लोग आया करते हैं। वहाँ एक सुन्दर म्यूजियम बनाया गया है जो एक मन्दिर की तरह दिखाई पड़ता है। इस सुन्दर संग्रहालय का उद्घाटन दादी प्रकाशमणि द्वारा सम्पन्न हुआ। कर्नाटक राज्य के जनता पार्टी के अध्यक्ष भ्राता चन्द्रशेखर जी ने संग्रहालय के महाद्वार को खोला। नगर के मेयर सत्यनारायण जी ने स्वग स्टाल का उद्घाटन किया। इस तरह अनेक प्रमुख व्यक्तियों ने मिलकर विभिन्न कक्षों का उद्घाटन किया। यह संग्रहालय ईश्वरीय सेवा अर्थ जनता के लिए मुख्य केन्द्र बना हुआ है।

राँची—समाचार ज्ञात हुआ है कि सिल्ली धमशाला में 'विश्व शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसका उद्घाटन सिल्ली के अंचल अधिकारी भ्राता दयानन्द सहाय जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रदर्शनी देखने के पश्चात् आपने बतलाया कि 'मानव उत्थान का एक मात्र साधन चरित्र निर्माण ही है" जो यहां दर्शाया गया है।

कन्याकुमारी—युवा वर्ष के उपलक्ष में ९ जून प्रातः ६ बजे 'भारत एकता युवा पद यात्रा' ब्र० कु० ईश्वरीय विश्वविद्यालल के युवाओं ने आरम्भ की। दादी प्रकाशमणि जी ने भारत से भिन्न-२ प्रान्तों से पधारे ५०० ब्रह्माकुमार-कुमारियों के बीच इस यात्रा को आरम्भ करने का आदेश दिया। उन्होंने लगभग ५० पदयात्रियों को तिलक दिया, बैज दिये और शुभकाकनाएँ दीं। यह पदयात्रा तमिलनाड, केरल, आन्ध्र प्रदेश, मध्यप्रदेश, यू० पी०, हरियाणा से गुजरती हुई २३ अक्टूबर को देहली पहुंचेगी।

सर्व दुःखों व तनावों का··· (पृष्ठ १ का शेष)

इस अवसर पर म० प्र० के वित्त मंत्री भ्राता रामकिशोर शुक्ल जी ने कहा कि—"हमारी महत्वाकांक्षाएं अधिक हैं परन्तु समय कम है। जब हम समय से काम नहीं कर पाते तो मन में खींच व तनाव पैदा होता है परन्तु राजयोग से मन पवित्र व एकाग्र बन जाता है जिससे कार्यक्षमता बढ़ती है तथा तनावों का निवारण सम्भव है। उन्होंने कहा कि जैसे अगरबत्ती की खुशबू चारों ओर फैल जाती है उसी प्रकार राजयोग द्वारा वातावरण पवित्र और हर मानव का जीवन श्रेष्ठ बन सकता है।

म० प्र० के शिक्षा एवम् युवा कल्याण मंत्री भ्राता बंसीलाल धूतलहरे जी ने कहा कि—दादी जी ने बताया "दृढ़ता सफलता की चाबी है" यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। इस प्रकार यदि हम अपने व्यस्त जीवन में कार्यों को निपटाने में अपनी आत्मिक शक्ति व दृढ़ता के प्रति सचेत रहें व उस सर्वशक्तिवान से सम्बन्ध रखें तो निश्चित ही तनावों का समाधान सम्भव है।

अन्त में उन्होंने संस्था द्वारा युवा पद यात्रा एवम् गांवों की आध्यात्मिक सेवा की योजना की प्रशंसा करते हुए उसमें पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इसी अवसर पर म० प्र० के वन मंत्री भ्राता बी० आर० यादव जी पधारे, उन्होंने दादी जो से मुलाकात की तथा राजयोग भवन एवम् म्यूजियम का अवलोकन किया।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70